3,3
5,C

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

शरीर-सर्वाङ्ग-लक्ष

❀ हस्त रेखा एवं आकृति विज्ञान ❀

(इस पुस्तक में मनुष्य-शरीर के चोटी से एड़ी तक के
सम्पूर्ण अङ्गों के प्रत्यक्ष स्वरूप से सच्चे साबित
होने वाले लक्षण लिखे गये हैं तथा हस्त-
रेखा-ज्ञान भी कराया गया है)

—:❀:—

लेखक—
भृगु संहिता पद्धति आदि ज्योतिष ग्रन्थों के रचयिता
भगवानदास मीतल
नया बाजार, मथुरा

—::❀:—

मुद्रक व प्रकाशक—
लाला श्यामलाल हीरालाल
श्यामकाशी प्रेस, मथुरा।

प्रथमवार १२००

मूल्य

विषय सूची

ं० विषय	पृष्ठ नं०
लम्बा कद	१
-ठिगना कद	२
- सामान्य कद	२
—स्थूल देह	३
—पतली देह	३
—देह का गोरा रङ्ग	४
७—देह का काला रङ्ग	४
८—देह का सामान्य रङ्ग	५
९—गोल चहरा भरा हुआ	५
१०-पतला चहरा	६
११-चौड़ा माथा पतला मुँह	६
१२-छोटा सिर और मोटे बाल	६
१३-मोटा सिर और छोटे बाल	७
१४-खल्वाट सिर	७
१५-थोड़ी उम्र में सफेद बाल	८
१६-ठोढ़ी के बाल	८
१७-सिरके बाल मुलायम व कड़े बाल	९
१८-छोटा और कम चौड़ा गड्ढेदार मस्तक	१०
१९-चौड़ा लम्बा मस्तक, भरा चहरा	११
२०-नासिका	११
२१-सिरका ऊपरी हिस्सा	१२
२२-सुन्दर चहरा, मोटा मस्तक	१२
२३-सुन्दर चहरा, बड़ा मस्तक	१३
२४-बीच से खाली भौंहें	१३
२५-गहरे बालों की मोटी भौंहें	१४
२६-छोटी और हलकी भौंहें	१४

२७—तिरछी कमान की सी भौंहें १४
२८—सीधी या टेढ़ी भौंहें १५
२९—दोनों भौंहें मिली हुई १५
३०—लाल नेत्र १५
३१—श्वेत नेत्र १६
३२—छोटे नेत्र १६
३३—एक नेत्र छोटा १६
३४—एक नेत्र वाला १६
३५—श्वेत कमल सरीखे नेत्र १
३६—नेत्रों के अन्दर दोनों तरफ़ पुतली पर तिल १
३७—दोनों अन्धे नेत्र १
३८—नेत्र में फुली १
३९—नेत्र की काली पुतली १
४०—बद शकल चेहरा १९
४१—चहरे पर चेचक के दाग २०
४२—गड्ढेदार आंखें २०
४३—आंखों के छोटी पलकें ये बाल की सी २१
४४—चौड़े बड़े कान २१
४५—कुछ छोटे कान २१
४६—औसद दर्जे के कान २२
४७—छोटी कान की लौर कनपटी से चिपटी हुई २२
४८—बड़ी कान की लौर कनपटी से चिपटी हुई २३
४९—कान की लम्बी लौर नीचे से गोलाई वाली २३
५०—कान की गोल लौर उभरी हुई २३
५१—कानों पर बाल २४
५२—बन्दर के कान की बनावट वाले कान २५
५३—लम्बी मूंछें २५

५४—छोटी मूंछे	२६
५५—नोंकदार उठी हुई मूंछे	२६
५६—दाहिनी मूंछों के पास तिल	२६
५७—मूंछों के बालों में भूरापन	२७
५८—सफाचट मूँछें	२७
५९—लम्बी ठोढ़ी बगैर गड्ढे की	२८
६०—ठोढ़ी में गड्ढा नीचे की तरफ	२८
६१—ठोढ़ी में सामने गड्ढा	२८
६२—छोटी ठोढ़ी	२९
६३—ठोढ़ी और कंठके दरमियान तालुवेका लटकता हुआ मांस	२९
६४—नासिका का दाहिना छिद्र नोकदार	३०
६५—नासिका का बामी छिद्र लम्बा नोकदार	३०
६६—नासिका के दोनों छिद्र लम्बे नोकदार	३०
६७—नासिका के दोनों छिद्र छोटे	३१
६८—दांत पंक्ति-बद्ध व सफेद	३२
६९—सामने के सब टेढ़े मेढ़े दाँत	३२
७०—सामने के दांतों में छिद्र	३२
७१—सामने के ऊपर वाले दो बड़े दांत	३३
७२—इधर उधरके दो दांत सामनेकी ऊपर वाली पंक्तिमें उठे हुए	३३
७३—दांत के ऊपर एक दांत	३४
७४—ऊपर वाला सामने का एक दांत उठा हुआ और एक दांत दबा हुआ	३४
७५—नीचे का होठ भारी	३५
७६—ऊपर का होठ भारी	३५
७७—दोनों होठ समान और सुन्दर	३६
७८—दोनों होठ पतले	३६
७९—दाहिने गाल पर मस्सा	३७

८०—बांये गाल पर मस्सा ३७
८१—दोनों गालों पर मस्सा ३७
८२—सारे बदन पर बाल ३८
८३—ठोढ़ी और कण्ठके बीच तालुये का मांस लटकता हुआ ३९
८४—अधिक बाहर निकलता हुआ कण्ठ ३९
८५—गर्दन के पीछे मांस की सिलवटें ४०
८६—पतली और लम्बी गरदन ४०
८७—छोटी और मोटी गरदन ४१
८८—चौड़ा और उठा हुआ सीना ४१
८९—छोटा और पतला सीना ४२
९०—सीने के ऊपर बाल ४२
९१—बगैर बालों का सीना ४२
९२—कण्ठ और ठोड़ी के बीचपिचका हुआ तालुआ ४३
९३—पीठ पर मस्सा ४३
९४—कंठ और ठोढ़ी के बीच सामान्य तालुआ ४४
९५—पेट की गहरी नाभी ४४
९६—पेट की भरी हुई नाभी ४५
९७—पेट की उभरी हुई नाभी ४५
९८—मोटा पेट ४५
९९—पतला पेट पिचका हुआ ४६
१००—पेट पर मांस की तीन सिलवटें ४६
१०१—दाहिने पेट या छाती पर तिल या मस्सा ४७
१०२—दाहिनी भुजा अधिक लम्बी ४७
१०३—दाहिनी कलाई पर मस्सा और तिल ४७
१०४—उंगलियाँ सूखी हड़ीली छिर छिरी ४८
१०५—दाहिनी भुजा कुछ छोटी ४८

१०६—हाथ की अंगुलियाँ अधिक हों ४९
१०७—हाथों की अंगुली सिरे पर से पतली ४९
१०८—हाथ की अंगुलियां सिरे पर तक एक सी मोटी ४९
१०९—हाथ का अगुष्ठ छोटा ओर मोटा ५०
११०—हथेली का मांस कठोर ५०
१११—हथेली का मांस मुलायम ५१
११२—हाथके नाखूनों की जड़में अर्धचन्द्राकार सफेदी ५१
११३—हाथ के नाखूनों में लम्बी लकीरें ५१
११४—हाथ में चिकने ओर सुर्ख नाखून ५२
११५—छाती में उठा हुआ कुब्ब ५२
११६—पीठ में उठा हुआ कुब्ब ५३
११७—हाथमें भाग्य की महीन रेखायें ५३
११८—हाथमें भाग्य की मोटी रेखायें ५४
११९— धन की रेखा गुरू के स्थान पर ५४
१२०—धन की रेखा शनी के स्थान पर ५५
१२१—धन की रेखा सूर्य के स्थान पर ५५
१२२—धन की रेखा बुद्ध के स्थान पर ५६
१२३—धन की रेखा शनी के नीचे से सूर्य के स्थान पर ५६
१२४—धन की रेखा का चन्द्र स्थान से प्रादुर्भाव ५७
१२५—धन की दो रेखायें ५८
१२६—रेखा नं० १ ५८
१२७—रेखा नं० २ ६०
१२८—जिस मनुष्यकी रेखा नं० २ सीधी सामने मंगलके स्थान पर ६१
१२९—जिस मनुष्य की रेखा नं० २ का मुंह कुछ नीचेकी तरफ बुद्धकी ओर ६१
१३०—जिस मनुष्यकी रेखा नं० २ ऊपरकी तरफ चन्द्रस्थानकी ओर ६१
१३१—जिस मनुष्यकी रेखा नं० २ के मुंहपर दो रेखा बन जाती है ६२

१३२—जिस मनुष्य की रेखा नं २ के मुंह पर सितारेका चिह्नहो ६२
१३३—रेखा नं० ३ ६३
१३४—हाथ में चतुष्कोंण ६३ १३५-हाथ में त्रिशूल ६५
१३६—हाथ में ध्वजा रेखा, सर्व स्थानों में ६६
१३७—नं० २ और ३ की रेखा के मूल से एक रेखा का गुरू के स्थान पर चढ़ना ६७
१३८—आंख के बीच की नीली पुतली ६७
१३९—आंखों के बीच की गोल कत्थई पुतली ६८
१४०—हाथ में तिल, सर्व स्थानों में ६८
१४१—अगुष्ठ में जौ का चिन्ह ७०
१४२—हाथ में सितारे का निशान ७१
१४३—हाथ के मूल में मत्स्य का निशान ७१
१४४—हाथ में धनुष का निशान ७२
१४५—मणीवंध रेखा में से धन रेखा का निकास ७२
१४६—मणीवंध रेखा ७२
१४७—दाहिने हाथ की अनामिका अगुली की तीसरी रेखा से कनिष्ठ का बड़ी या छोटी ७३
१४८—हाथ की अंगुलियों में चक्र का निशान ७३
१४९—हाथ की अंगुलियों में शंख का निशान ७५
१५०—हाथ की बहुत मुलायम चमड़ी ७६
१५१—हाथकी बहुत कड़ी चमड़ी ७६
१५२—हाथ की चमड़ी थोड़ी मुलायम ७७
१५३—कमर पतली ७७ १५४-कमर मोटी ७७
१५५—भोगेन्द्रिय पर दाहिनी ओर या सनमुख तिल ७८
१५६—भोगेन्द्रिय का बांई तरफ झुकाव ७८
१५७—भोगेन्द्रिय का दाहिनी ओर झुकाव ७८
१५८—भोगेन्द्रिय का अधिक स्थूल और लम्बापन ७९

१५९—भोगेन्द्रिय का हल्का आकार ७९
१६०—स्थूल जंघा ७९ १६१—पतले जंघा ८०
१६२—पतली टांगें ८०
१६३—टांगों की मोटी पिंड़री ८१ १६४-लंगड़ी टांगें ८१
१६५—चलते वक्त पांव के पञ्जों का आगे की तरफ से एक दूसरे की तरफ झुकाव होना ८१
१६६—पांव के तलुओं में गड्ढा न होना ८२
१६७—पांव के तलुओं में गड्ढा ८२
१६८—चलते वक्त पांव के पञ्जों का आगे की तरफ से दोनों का विपरीत होकर चलना ८३
१६९—कन्धे उचकाने की आदत ८३
१७०—पांव के तलुये में ऊर्ध रेखा ८३
१७१—पांव की अँगुलियों में चौथी छोटी अंगुली पांचवी के बराबर छोटी ८४
१७२—अधिक तनकर या ऊपर को मुँह करके चलना ८५
१७३—दाहिने पांव के तालुये में ऐंढ़ी के दाहिनी तरफसे एक का निकलकर ऊपरको अंगुली और अंगूठेकी तरफ जाना ८५
१७४—हकला कर बोलना ८६
१७५—औरत के मुँह पर मूंछों का चिह्न ८६
१७६—हर प्रकार के अङ्ग फड़कना ८६
१७७-बुद्धि व हृदय ८९ १७८-दैनिक रोजगार ८९
१७९—उन्नति पथ और मान ८९ १८०-सुख स्थान ९०
१८१—शत्रु स्थान ९० १८२-पुरुषार्थ स्थान ९०
१८३—भाग्य स्थान ९१ १८४-खर्च स्थान ९१
१८५—संचित धन ९१ १८६-पूर्व संचित धरोहर ९१

* * *

सब प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता:-श्यामकाशी प्रेस, मथुरा

श्री गणेशायनमः

शरीर-सर्वाङ्ग-लक्षण

अर्थात्

हस्तरेखा एवं आकृति विज्ञान

मंगलाचरण

मूक हॉय वाचाल पंगु चढ़हिं गिरवर गहन ।
जासु कृपा सो दयाल द्रवहु सकल कलमल दहन ॥

लम्बा कद

जिस मनुष्य का कद लम्बा होता है, वह जीव विवेक और वाणी की वास्तविकता और लावण्यता के सम्बन्ध में कुछ त्रुटि युक्त होने पर भी उसे समझ न सकने वाला किंतु अहंभाव की कुछ वृद्धि पाने वाला एवं अपने मनकी इच्छा के अनुकूल चलने वाला और लौकिक मर्यादा का कुछ ख्याल रखने वाला, तथा धर्म शास्त्र की मर्यादा का आंतरिक रीति से कुछ लापरवाही करने वाला और अपने मन के तथा देह के सम्बन्धित कार्यों को बड़ी भारी उमंगों के साथ पालन करने वाला और शील का थोड़ा सा ध्यान रखने वाला, स्वार्थ युक्त रहने वाला भोग चाहने वाला, हेकड़ मिजाजी होता है ।

ठिगना कद

जिस मनुष्य का कद छोटा होता है वह जीव उदारता में कुछ कमी पाने वाला और स्वार्थ परता में कुछ वृद्धि पाने वाला तथा स्वार्थ की सिद्धि करने के लिए महान प्रयत्न तथा महान परिश्रम करने वाला और सदैव गुप्त रीति से अपने लाभ की ओर अग्रसर होने वाला तथा हृदय की आंतरिक भावनाओं की वास्तविकता को कुछ दबाकर प्रकट में वाणी के द्वारा कुछ विशेष सज्जनता सूचित करने वाला तथा कुछ शील शांति का पालन करने की सी आदत रखने वाला कुछ परिश्रमी, कुछ चिंतित होता है।

सामान्य कद

जिस मनुष्य का सामान्य कद होता है वह जीव थोड़ी उमंगों वाला बहुत आगा पीछा सोचने वाला बड़ी सावधानता से कार्य करने वाला धर्म और अधर्म का विचार करने वाला, तथा लौकिक व्यवहार का यथोचित पालन करने वाला और क्रोध तथा शांति का समयानुसार पालन करने वाला, मानाभिमान का बराबर ध्यान रखने वाला और सुन्दर सामान्य रीति का परिश्रम करने वाला तथा स्वार्थ की पूर्ति के स्थान में विवेक से अच्छा काम लेने वाला सज्जनता युक्त होता है।

स्थूल देह

जिस मनुष्य की मोटी देह होती है वह जीव अधिक स्वार्थ सिद्ध करने वाला, बड़ी लापरवाही रखने वाला, बड़ी हठधर्मी से काम करने वाला, कुछ अधिक भोजन पाने वाला, अधिक आराम चाहने वाला तथा हँसने हँसाने की आदत पाने वाला और समयानुसार अधिक क्रोध से भी काम निकालने वाला, ज्यादा नफा चाहने वाला तथा मानाभिमान का कुछ सामान्य ख्याल रखने वाला यथार्थ धर्म पालन का थोड़ा ध्यान रखने वाला एवं लौकिक वस्तुओं की सफलता को बड़ा महत्व देने वाला, अहंभावी होता है।

पतली देह

जिस मनुष्य की पतली देह होती है वह जीव किसी प्रकार संतोष वृत्ति में रहने वाला, अधिक मुनाफा प्राप्त करने में दिक्कत सहने वाला और हृदय में किसी प्रकार चिंतित रहने वाला और सुख प्राप्ति के साधनों में कुछ कमी पाने वाला तथा हृदय में कुछ स्वाभिमान रखने वाला, स्वभाव में कुछ क्रोधाग्नि का योग पाने वाला और कभी २ कोई मान अपमान का भी योग पाने वाला तथा ईश्वर और भाग्य भविष्य पर विश्वास करने वाला तथा तृष्णा और कपट के लिये मजबूरी हालत में स्तैमाल करने वाला होता है।

देह का गोरा रंग

जिस मनुष्य का रंग गोरा होता है वह जीव आवश्यक पदार्थों को कुछ सुविधा पूर्वक प्राप्त करने वाला तथा कठिनाइयों को कुछ सरलता से पार करने वाला तथा इष्ट मित्रों के सहयोग से कुछ सुख का योग पाने वाला तथा सुन्दर पदार्थों से प्रेम करने वाला तथा हृदय में कुछ सरलता भी रखने वाला और स्वाभिमान भी रखने वाला तथा किसी भी प्रकार कुछ अधिक भोग्य प्राप्त करने वाला और किसी-किसी से विशेष स्नेह करने वाला तथा नवीनता चाहने वाला होता है।

देह का काला रंग

जिस मनुष्य का रंग काला होता है वह जीव धन वृद्धि के लिये बड़ा प्रयास करने वाला एवं गुस्सा रखने वाला तथा क्रोध युक्ति से काम करने वाला, पेचीदा चालों से फायदा उठाने वाला तथा अपने स्वार्थ के सन्मुख दूसरों की उन्नति में कुछ दुःख का अनुभव करने वाला एवं कुछ कड़वा बोलने वाला और अपने जीवन में किसी प्रकार की नीरसता का अनुभव करने वाला और जीवन में कभी कुछ अपमान का योग पाने वाला तथा कुछ भोग व उन्मत्तता चाहने वाला परिश्रम व कुछ दिक्कतों के योग से उन्नति करने वाला तथा मित्र वर्ग में कुछ आन्तरिक

न्यूनता पाने वाला और कुछ पारलौकिक धर्म की परवाह न करने वाला कुछ साहसी हठी होता है।

देह का सामान्य रंग

जिस मनुष्य का गेहुँआं रंग होता है वह जीव कुछ सुन्दर सुखद कर्म करने वाला, लौकिक में प्रतिष्ठा पाने वाला, मानापमान का बड़ा ख्याल रखने वाला, ईश्वर चिंतन का भी ख्याल रखने वाला, अपने से सम्बन्धित हर एक विषय में बड़ा आगा पीछा सोचने वाला, साधारण परिश्रम करने वाला, कुछ मीठा बोलने वाला, बड़ी चतुराई से काम निकालने वाला तथा अधिकांश लोगों से मैत्री रखने वाला, भोग विलास की भी सामान्य शक्ति एवं साधन पाने वाला कुछ संतोषी होता है।

गोल चहरा भरा हुआ

जिस मनुष्य का चहरा भरा हुआ, गाल फूले हुए हों तो वह जीव अच्छा सुख प्राप्त करने वाला और अच्छा भोजन प्राप्त करने वाला तथा थोड़ा परिश्रम करके लौकिक सफलतायें पाने वाला, चित्त में प्रसन्न रहने वाला एवं चिन्ता को थोड़ा स्थान देने वाला तथा लापरवाही के साथ कार्य करते रहने वाला और मनमें स्वाभिमान रखने वाला तथा सहायक मित्र सम्बन्धी का अच्छा योग पाने वाला तथा हँसने हँसाने की आदत पाने वाला तथा

लौकिक सफलतायें पाने वाला प्रभाव युक्त होता है।

पतला चहरा

जिस मनुष्य का पतला चहरा होता है वह जीव सुख प्राप्ति के साधनों में कमी पाने वाला, तथा हितैषी बन्धु बांधवों तथा मित्रों की वास्तव में कमजोरी पाने वाला तथा मान और प्रभाव की कमी पाने वाला, हृदय में कुछ चिंतित रहने वाला, मनमें कुछ क्रोध व कुछ आत्मग्लानि पाने वाला एवं कुछ छिपाव शक्ति से काम लेने वाला तथा मनमें कुछ जिदबाजी रखने वाला थोड़ी जीविका वाला होता है।

चौड़ा माथा और पतला मुँह

जिस मनुष्य का माथा चौड़ा और मुँह पतला हो तो वह जीव अपनी अक्लमन्दी से बहुत काम निकालने वाला और किसी भी एक लाइन में भाग्यवान समझा जाने वाला किन्तु अपने पारवारिक जीवन में कुछ दुःख अनुभव करने वाला और आन्तरिक हितैषियों की कमी महसूस करने वाला तथा बाहरी स्थिति में मान पाने वाला एवं अपने दुःख की पूरी परवाह न करने वाला तथा कुछ दूर की सोचने वाला होशियार होता है।

छोटा सिर और मोटे गाल

जिस मनुष्य का सिर छोटा और गाल फूले हुए हों तो

वह जीव सुख प्राप्ति के मजबूत साधन पाने वाला, अच्छे वस्त्र और अच्छा भोजन पाने वाला, ज्ञान की वास्तविकता में कमी पाने वाला और लौकिक वस्तुओं को व धन को प्राप्त करने में सफलता पाने वाला, बेफिक्री से रहने वाला, बोलचाल व बातचीत में कुछ हिचकिचाहट का योग पाने वाला, अपने अन्दर अपने प्रभुत्व के सम्बन्ध में कुछ कमी महसूस करने वाला और पारलौकिक धर्म की कुछ लापरवाही रखने वाला होता है।

मोटा सिर और छीदे बाल

जिस मनुष्य का मोटा सिर और छीदे बाल मुलायम होते हैं वह जीव भाग्यवानी भोगने वाला तथा प्रतापी समझा जाने वाला तथा अपने संपर्क के सम्बन्धियों में बड़ा प्रभाव रखने वाला बड़ी चतुराई से काम लेने वाला तथा दूरन्देशी की बातें सोचने व कहने वाला तथा मान सन्मान पाने वाला, खूब फायदा उठाने वाला इज्ज़तदार होता है।

खल्वाट सिर

जिस मनुष्य के सिर के अगाड़ी से लेकर पीछे तक बाल उड़े हुए हों और ऊपर से सिर चौड़ा हो तो धन की स्थाई शक्ति प्राप्त करने वाला, मान प्रतिष्ठा पाने वाला स्वार्थ सिद्धि के स्थान में मजबूती से काम लेने वाला तथा बहुत लम्बे विचारों से काम लेने वाला भोग विलास प्राप्त

करने वाला और धन की वृद्धि की विशेष चिन्ता व साधन करने वाला और चोटी के पीछे या चोटी के पास के बाल उड़े हुए हों और आगे थोड़े २ बाल हों तो मेहनत से उन्नति करते रहने वाला तथा खर्च के स्थान में कंजूसी से या बड़ी किफायतदारी से काम लेने वाला तथा धन के मुकाबले धर्म को महत्व समझ सकने वाला एवं बड़ी भारी नाप तोल से व काट छाँट से काम निकालने वाला और पतला सिर होवे तो धनकी कमी किन्तु आजादीकी प्राप्ति वाला सतर्क,सयाना होता है।

थोड़ी उम्र में सफेद बाल

जिस मनुष्य के थोड़ी उम्र में सफेद बाल हो जाते हैं वह जीव सदैव अपनी बातों के योग से दूसरे व्यक्तियों पर प्रभाव डालने का संलग्नता पूर्वक यथा शक्ति भरसक प्रयत्न करने वाला और गुप्त व गूढ़ युक्तियों से भी अपनी बात को बड़ी करने वाला तथा जल्दी से जल्दी गृहस्थी का बोझ अपने ऊपर पा लेने वाला और अपने अन्दर बड़ा बड़प्पन मानने वाला तथा बड़प्पन की बातें कहने वाला और बड़प्पन जैसे सम्बन्ध का सा कार्य करने वाला और हृदय में कुछ गुप्त अहंकार रखने वाला तथा बड़ी होशियारियों से काम निकालने वाला तथा दूसरे व्यक्तियों में अकल की कुछ कमी देखने वाला तथा जरूरत से ज्यादे

चौकन्ना रहने वाला, दूसरे व्यक्तियों में अकल की कुछ कमी देखने वाला, चलते पुर्जे, मानयुक्त होता है।

चोटी के बाल

जिस मनुष्य की चोटी के बाल लम्बे और कुछ घन के बँधे हुए रहते हों तो वह जीव धार्मिक आचरण करने वाला, ईश्वर को जानने का प्रयत्न करने वाला, सतोगुण को बड़ा मानने वाला सज्जनता युक्त होता है और जिस की चोटी के बाल छोटे, पतले और खुले हुए हों तो वह मनुष्य आन्तरिक धर्म का विशेष पालन न कर सकने वाला और ईश्वर की निष्ठा में कुछ कमी पाने वाला तथा मन पर कम काबू करने वाला होता है और जो मनुष्य चोटी कतई नहीं रखता है वह किसी प्रकार धर्म के उस बन्धन में नहीं रह सकता जिसमें गृहस्थ धर्म की वास्तविक गणना हो सके और अपने मन मुरादी मार्ग का अनुसरण करने वाला होता है।

सिर के बाल मुलायम व कड़े

जिस मनुष्य के सिर के बाल मुलायम और पतले व काले हों तो वह जीव भाग्यवान थोड़ा परिश्रम करने वाला व अमीरात का ढंग प्राप्त करने वाला, शीलता रखने वाला, कोमल स्वभाव वाला तथा कीमती व कोमल ज्ञान वाला, लोक में प्रिय बनकर रहने वाला, मीठा बोलने वाला, मान पाने वाला, सुखी होता है और यदि मोटे और कड़े

बाल हों तो वह जीव कुछ कठोर बुद्धि वाला, स्थूल ज्ञान वाला तथा क्रोध और जिद से काम लेने वाला, अधिक मेहनत व दौड़ धूप करने वाला, हितैषी प्रेमियों की कुछ कमी पाने वाला, लोक मर्यादा के मुकाबले अपने मन की गति के अनुसार चलने वाला, भोग की अधिक इच्छा रखने वाला, स्वार्थी युक्त होता है और जिसके बाल कनपटी की तरफ से मस्तक की तरफ बढ़ते हुए दीखते हैं वह जीव भाग्यवानी से पतन की ओर जाने लगता है और स्वार्थ के कारण उचित अनुचित कर्म धर्म का कम ख्याल करता है और जिसके सिर के लम्बे २ बाल होते हैं वह प्रेमी जीवन बनने वाला और घूँघर वाले बाल हों तो रसिक स्वभाव वाला, दिमाग में कुछ कला रखने वाला घुमाव फिराव की बातों से फायदा उठाने वाला, आनन्दी होता है।

छोटा और कम चौड़ा गड्ढेदार मस्तक

जिस मनुष्य का छोटा और कम चौड़ा मस्तक हो तो वह जीव धन की कमी का योग पाने वाला तथा ज्ञान की कमी का योग पाने वाला और संकीर्ण हृदय और सङ्कीर्ण विचार वाला, मान प्रतिष्ठा प्रभाव आदि में भी कमी पाने वाला तथा स्वार्थ के सन्मुख परमार्थ का निरादर करने वाला, ईश्वर के विश्वास में कमी पाने वाला तथा

यश की कमी पाने वाला हठी लापरवाह होता है और मस्तक के बीच में गड्ढा हो तो छोटी तकदीर वाला, उन्नति में रुकावटें पाने वाला, झंझट युक्त होता है।

चौड़ा लम्बा मस्तक भरा चहरा

जिस मनुष्य का लम्बा चौड़ा मस्तक व भरा चहरा हो तो वह जीव बड़ा भारी समझदार तथा धनवान भाग्यवान एवं दूरदर्शी और लौकिक तथा पारलौकिक विषयों को खूब जानने वाला यश एवं प्रभाव पाने वाला, मान पाने वाला, बहुत प्रकार के सुख व आराम पाने वाला तथा पारवारिक सुन्दर शक्ति पाने वाला और इष्ट मित्रों की सहायता पाने वाला, विद्या युक्त होता है।

नासिका

जिस मनुष्य की मोटी लम्बी नासिका हो तो वह जीव बड़ा स्वाभिमानी तथा बात वाला, प्रभावशाली होता है और यदि लम्बी नासिका बहुत पतली हो और बीच से कुछ उठी तनी हो तो कुछ थोथा अहङ्कार करने वाला अन्दर स्थिति में कमजोरी पाने वाला होता है और नासिका की पूरी लम्बाई में नासिका के ऊपर कहीं कुछ गड्ढा सा हो तो वह जीव थोड़ी लज्जा व थोड़ी बात वाला तथा थोड़े प्रभाव वाला व कुछ असत्य से काम निकालने वाला और मान अपमान की ज्यादा परवाह न करने वाला होता

है और यदि मोटी नासिका आगे से छोटी हो तो चतुराई की व मान की कुछ कमी पाने वाला किन्तु अपने अन्दर कुछ अहङ्कार रखने वाला होता है और लम्बी नासिका आगे की तरफ ज्यादा झुकी हुई हो तो वह जीव अधिक मतलबी, बड़ा होशियार, बात रखने वाला, इज्ज़तदार होता है और जिसकी नासिका के दोनों नँथुनों के बीच का माँस जो ऊपर वाले होठ पर टेढ़ा होता है यह जीव गृहस्थी के किसी मामले में कुछ दुःख अनुभव करने वाला, किन्तु अदां रखने वाला होता है।

सिर का ऊपरी हिस्सा

जिस मनुष्य का सिर ऊपर-से यानी चोटी से आगे मस्तक की तरफ कुछ टीले कीसी शकल में उठा हुआ हो तो वह जीव कुछ ईश्वरीय शक्तियों का व किसी विशेष तत्व का जानकार आदर्श होता है और यदि सिर में गड्ढा सा ऊपर की तरफ हो तो वह जीव आदर्श कर्म और आदर्श तत्व की तरफ से विमुख रहने वाला और लौकिक को ही बड़ा मानने वाला होता है।

सुन्दर चहरा छोटा मस्तक

जिस मनुष्यका चहरा सुन्दर और छोटा मस्तक होतो वह जीव लौकिक जीवन में बहुत आनन्द व ऐश प्राप्त करने वाला तथा भोग विलास के साधन पाने वाला तथा मित्रों

से सुख अनुभव करने वाला और पारलौकिक धर्मों के सम्बन्ध में थोड़ी सी रुचि रखने वाला किन्तु धर्म के यथार्थ ज्ञान को प्राप्त न कर सकने वाला और कुछ गुप्त युक्तियों से भी फायदा व सुख उठाने वाला तथा हँसने हँसाने वाला स्वार्थ युक्त, मीठा बोलने वाला और विद्या की कुछ न्यूनता पाने वाला होता है।

सुन्दर चहरा बड़ा मस्तक

जिस मनुष्य का सुन्दर चहरा और बड़ा मस्तक हो तो वह जीव दिव्य ज्ञान प्राप्त करने वाला, अहिंसा, दया, परोपकार आदि गुणों को रखने वाला तथा सुन्दर मीठे शब्द बोलने वाला ईश्वर में निष्ठा रखने वाला तथा लौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकार के कर्मों की सुन्दर, शक्ति पाने वाला, समाज में मान सन्मान प्राप्त करने वाला दूसरों पर अच्छा प्रभाव डालने वाला बड़ा चतुर, सुखी और भाग्यवान होता है।

बीच से खाली भौंहें

जिस मनुष्य की भौंहों के बीच का हिस्सा बिल्कुल साफ चमकता हुआ चौड़ा हो और भौंहों में सामान्य औसतन बाल हों तथा बीच-बीच में से भौंहों के हिस्से मांस सहित व बाल सहित ऊपर को उठे और उभरे हुए दीखें तो वह जीव हृदय का निर्मल स्पष्ट और कीमती बातें

कहने वाला, अलौकिक तत्व की खोज करने वाला, सब से स्नेह करने वाला तथा गम्भीर ज्ञान रखने वाला, बड़ी प्रतिभा पाने वाला, आदर्श और न्याई होता है।

गहरे बालों की मोटी भौंहें

जिस मनुष्य की भौंहें मोटी ज्यादा बालदार होती हैं वह जीव अपने अन्दर बड़प्पन और अहङ्कार रखने वाला, भोग विलास का ठाट बढ़ाने वाला, दूसरों पर प्रभाव जमाने की हर समय चेष्टा करने वाला, अधिक नफा व अधिक धन प्राप्त करने की योजना बनाने वाला क्रोधी होता है।

छोटी और हलकी भौंहें

जिस मनुष्य की छोटी और हलकी भौंहें होती हैं वह जीव कुछ दब्बू नीति वाला, शील सन्तोष वाला, शान्ति चाहने वाला, थोड़ा भोग विलास पाने वाला, मित्र भाव रखने वाला, कुछ परिश्रम से काम करने वाला, कुछ कम बोलने वाला, साधारण जीव होता है।

तिरछी कमान की सी भौंहें

जिस मनुष्य की कमान की सी भौंहें होती हैं वह जीव अपने जीवन में विशेष कला रखने वाला, तीक्ष्ण और गम्भीर ज्ञान प्राप्त करने वाला, बड़ा मान पाने वाला, बड़ा लाभ पाने वाला और दूसरों पर बड़ा आदर्श प्रभाव डालने

वाला तथा भोग विलास रहन सहन के उत्तम साधन पाने वाला, इज्जतदार प्रतिष्ठित होता है ।

सीधी या टेढ़ी भौंहें

जिस मनुष्य की टेढ़ी भौंहें मस्तक से कान की तरफ नीचे को गिरती हों या बिल्कुल सीधी हों और बीच में से उठी न हों तो वह जीव धन संग्रहका प्रभाव न पाने वाला, मामूली साधारण जीवन व्यतीत करने वाला, साधारण ज्ञान वाला, यश और विद्या की कमी पाने वाला मान की कमी पाने वाला तथा मेहनत से काम करने वाला होता है ।

दोनों भौंहें मिली हुईं

जिस मनुष्य की दोनों भौंहें बीच से मिल जाती हैं वह जीव बहुत ज्यादा चतुराई व चालाकी से काम निकालने वाला तथा स्पष्ट बातें न करके मन के अन्दर की बातों को छिपाकर मतलब बनाने वाला एवं धर्म की कुछ कम परवाह करने वाला तथा स्वार्थ सिद्धि का मूल ध्यान रखने वाला होता है ।

लाल नेत्र

जिस मनुष्य के नेत्र लाल रंग के होते हैं वह जीव अपने अन्दर बड़ा तामस रखने वाला, बड़ा स्वाभिमान व अहङ्कार रखने वाला और अधिक स्वार्थ रखने वाला, हुकूमत चाहने वाला और दूसरों पर अपना प्रभुत्व व प्रभाव

रखने का पूरा प्रयत्न करने वाला तथा गहरा लाभ चाहने वाला और शील का उल्लंघन करने वाला तथा शान्ति की कमी पाने वाला, हठधर्मी जिद्दी होता है।

श्वेत नेत्र

जिस मनुष्य के नेत्र सफेद हों तो वह जीव, शान्तप्रिय मिष्ठभाषी, मनमें कोमलता रखने वाला, अहिंसा का पालन करने वाला, कपट को बुरा समझने वाला तथा न्याय चाहने वाला, विचारवान, प्रिय होता है।

छोटे नेत्र

जिस मनुष्य के नेत्र छोटे हों तो वह जीव विद्या विवेक व न्याय की कमी पाने वाला तथा गहरी और दूर की खोज न कर सकने वाला, मान प्रतिष्ठा की कमी पाने वाला और छिपे तौर अपना मतलब बनाने वाला, भीतरकी अकल वाला होता है।

एक नेत्र छोटा

जिस मनुष्य का एक नेत्र छोटा हो या बातें करते वक्त एक तरफ की आंख मिची सी करके बोलता हो तो वह जीव बातों में बड़ी भारी सफाई दिखाने वाला, मनमें छिपाव रखने वाला तथा सज्जनता के अन्दर पक्षपात रखने वाला, कहने और करने की बातों में फरक रखने वाला और सदैव स्वार्थ की पूर्ति करने में ही लगा रहने वाला, भीतरी

चतुराई वाला और वक्त पड़ने पर न्याय और प्रेम को छोड़कर फ़ायदा उठाने वाला बाहरी सज्जन होता है।

एक नेत्र वाला

जिस मनुष्य के एक नेत्र ही हो तो वह जीव दृढ़ता पूर्वक अपने स्वार्थ की सिद्धि करने वाला, छिपी तरकीबों से हमेशा फ़ायदा उठाने वाला तथा भलमनसाहत दिखाने वाला, वास्तविक न्याय अन्याय की अधिक परवाह न करने वाला, अधिकांश इकतरफा बात सोचने वाला, लौकिक उन्नति को बड़ा मानने वाला, ईश्वर और परलोक धर्म की प्रायः परवाह न करने वाला, थोड़ी चिन्ता करने वाला होता है।

श्वेत कमल सरीखे नेत्र

जिस मनुष्य के नेत्र सफेद कमल सरीखे हों तो वह जीव बड़ा बुद्धिमान, उन्नति करने वाला, गहरे और कीमती मार्ग का अनुसरण करने वाला, बड़ा मान पाने वाला, बड़ी दूरंदेशी की बातें सोचने वाला तथा दूसरों पर प्रभाव रखने वाला एवं न्याय और दया चाहने वाला और धन-शक्ति पाने वाला तथा धर्म कर्म और ईश्वर को मानने वाला बड़ा चतुर होता है।

नेत्रों के अन्दर दोनों तरफ पुतली पर तिल

जिस मनुष्य के नेत्रों के अन्दर दोनों तरफ को पुतली

पर तिल होते हैं वह जीव बहुत भारी होशियारी और स्यानपती से काम करने वाला और अपने मतलब को सिद्ध करने के लिये हर एक प्रकार की युक्तियों से व चालाकियों से काम बनाने वाला तथा छिपाव की शक्ति से फायदा उठाने का दावा रखने वाला और लौकिक स्वार्थ सिद्धि को ही मूल महत्व देने वाला अर्थात् स्वार्थ के सामने परमार्थ को स्थान न देने वाला एवं दुनियांदारी के सामने सज्जनता से युक्त व्यवहार करने वाला, बातों के अन्दर सदैव अपने माफिक सफाई की मजबूत बातें कहने वाला अर्थात् अपनी भेद की बातों को भी सचाई में दरसाने वाला तथा अपनी उन्नति के लिए महान् प्रयत्नशील रहने वाला बड़ा सतर्क और बड़ा चतुर होता है।

दोनों अन्धे नेत्र

जिस मनुष्य के दोनों नेत्र अन्धे हों तो वह जीव अन्दरूनी बातों की विशेष जानकारी करने वाला, मानसिक शक्ति से बहुत २ बड़े काम करने वाला, अपने कार्य में संलग्न रहने वाला, अपने विचारों के सन्मुख संसार की परवाह न करने वाला, कुछ पारलौकिक ज्ञान की तरफ झुकाव खाने वाला और स्वार्थ के वशीभूत रहने वाला तथा अपने मन की मानी करने वाला, बड़ा लापरवाह होता है।

नेत्र में फुली

जिस मनुष्य के नेत्र में फुली हो तो वह जीव हमेशा

अपने स्वार्थ की सिद्धि में लगा रहने वाला, बड़ी पेचीदा युक्तियों से फायदा उठाने वाला तथा छिपी तौर से बहुत र से काम करने वाला, सत्य झूँठ की परवाह न करने वाला, मतलब की ही बातें कहने वाला, बातों में सफाई सचाई और इन्साफ दिखाने वाला, थोड़ा मान पाने वाला, प्रेमियों की कमी पाने वाला, दूसरों को नुकसान देने वाला होता है।

नेत्र की काली पुतली

जिस मनुष्य की आंख की काली पुतली एक तरफा खिंचाव खाती हो तो वह जीव व्यवहार के अन्दर कुछ नाजाइज फायदा उठाने वाला और अधिक स्वार्थ सिद्धि में लगा रहने वाला बड़ी चतुराई और सफाई की बातें कहने वाला व काम निकालने वाला लौकिक सफलता के सामने लज्जा न्याय और सत्य को कम महत्व देने वाला, प्रेमियों की कुछ कमी पाने वाला तथा मान व प्रभाव में कुछ कमी पाने वाला होता है।

बद शकल चेहरा

जिस मनुष्य का बद शकल चेहरा हो तो वह जीव असत्य या रूखे भाषण से भी काम निकालने वाला, दया का उल्लंघन करने वाला, प्रेमियों की कमी पाने वाला, मान और प्रभाव की कमी महसूस करने वाला और प्रशंसा प्राप्ति की परवाह न करके मन की इच्छा पूर्ति करने वाला

तथा काम वासना मनमें रखने वाला, सुख के साधनों में कमी पाने वाला तथा रंज द्वेष करने का योग पाने वाला, और स्वार्थ के सन्मुख परमार्थ की परवाह न करने वाला और दिव्य ज्ञान का सर्वथा अभाव पाने वाला होता है।

चहरे पर चेचक के दाग

जिस मनुष्य के चहरे पर चेचक के दाग हों तो वह जीव कुछ छिपी युक्ति से भी काम निकालने वाला तथा अपनी स्वार्थ सिद्धि का कुछ विशेष ध्यान रखने वाला और धर्म के ज्ञान के मुताबिक धर्म का उतना पालन न कर सकने वाला और समय पड़ने पर कुछ कड़वे और रूखे शब्दों से भी काम निकालने वाला तथा कुछ दिखलाने की अधिक भलमनसाहत रखने वाला एवं हृदय में क्रोध काम को स्थान देने वाला तथा सुख शान्ति के वातावरण में कुछ कमी पाने वाला और यथार्थ प्रेम और स्नेह के सम्बन्ध का लेन देन विघ्नयुक्त पाने वाला होता है।

गड्ढेदार आंखें

जिस मनुष्य की कुछ गड्ढेदार आंखें हों अर्थात् आंखें मस्तक के नीचे गड्ढे से में घुसी हुई मिची सी हों तो वह जीव अपने प्रभाव में महान् कमी पाने वाला तथा उन्नति के मार्ग में रुकावटें पाने वाला और विद्या तथा तीक्ष्ण ज्ञान की बहुत कमी पाने वाला एवं छिपी हुई छोटी २ तरकीबों से कुछ

अधिक लाभ पाने की योजनायें बनाने वाला और काम भोग आदि में कुछ रुचि रखने वाला, थोड़ी आमदनी पाने वाला, कुछ दुःख और झंझट युक्त जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

आंखों की छोटी पलकें बे बाल की सी

जिस मनुष्य की आंखों के पलक छोटे और बे बाल के से हों तो वह जीव लज्जा शर्म को थोड़ा या मामूली मानने वाला, दूसरों के भले बुरे समझने के डर से किसी काम में हिचकिचाहट न मानने वाला तथा बहुत थोड़ा मान पाने वाला, मेहनत मजदूरी से सम्बन्धित काम करने वाला, हँसी दिल्लगी की आदत रखने वाला तथा अपने अन्दर बड़ी लापरवाही रखने वाला मनमौजी होता है।

चौड़े बड़े कान

जिस मनुष्य के कान चौड़े और बड़े हों तो वह जीव अपने को बड़ा बुद्धिमान समझने वाला और दूसरों को बातों में कायल करने की कोशिश करने वाला, किन्तु वास्तव में थोड़ी विद्या और कुछ न्यून बुद्धि वाला तथा बड़ा सतर्क रहने वाला और कुछ हेकड़ी व हठधर्मी दिमाग में रखने वाला और कुछ न्याय से भी ज्यादा फायदा उठाने वाला तथा औसत दर्जे का मान पाने वाला होता है।

कुछ छोटे कान

जिस मनुष्य के बहुत छोटे कान हों तो वह जीव

अपने अन्दर कुछ दब्बू नीति और कुछ हठधर्मी या जिद से काम लेने वाला तथा अपने मन की गति के अनुसार चलने वाला और अधिक विद्या या अधिक आदर्श ज्ञान प्राप्त न कर सकने वाला, कुछ स्वतन्त्रता युक्त रीति से रहने वाला तथा गृहस्थी में बड़े झंझट पाने वाला, प्रेम की कमी पाने वाला व कुछ प्रभाव में न्यूनता पाने वाला, कुछ शक्ति युक्त होता है।

औसत दर्जे के कान

जिस मनुष्य के औसत दर्जे के कान हों तो वह जीव लौकिक व्यवहार में कुशलता पूर्वक कार्य करने वाला, अच्छी बुरी बातों को ढंग से सुनने समझने वाला तथा मान मर्यादा का ख्याल रखने वाला और आगा पीछा सोचकर चलने वाला और जैसा समय देखे वैसा ढंग बनाने वाला चतुर होता है।

छोटी कान की लौर कनपटी से चिपटी हुई

जिस मनुष्य की कान की छोटी लौर कनपटी से चिपटी हुई हों तो वह जीव केवल बुद्धि के योग से परिश्रम करके रोजगार चलाने वाला अर्थात् किसी भी प्रकार के हुनर की बदौलत खर्चा सीधा करने वाला और वाणी तथा विद्या में लावण्यता की कुछ कमी पाने वाला और अपनी दैनिक स्थिति व दिनचर्या में कुछ सादगी का योग पाने वाला

और अधिक होशियारी तथा जिदबाजी से काम लेने वाला तथा आन्तरिक धर्म की परवाह न करने वाला होता है।

बड़ी कान की लौर कनपटी से चिपटी हुई

जिस मनुष्य की बड़ी कान की लौर कनपटी से चिपटी हुई हो तो वह जीव अपनी अकलमंदी से बड़ा शानदार जीवन व्यतीत करने वाला और अच्छे २ आदमियों से मेल भाव रखने वाला तथा अपनी स्थिति से भी अधिक प्रभाव युक्त रहने वाला और अपनी बुद्धि से बड़ी कीमती योजनायें पैदा करने वाला एवं बड़ी सावधानी से कार्य करने वाला और मान अपमान का महान् ख्याल रखने वाला तथा धन संग्रह की टटोल में रहने वाला, बड़ा बुद्धिमान तथा लौकिक कला प्रवीण, धर्म में स्नेह करने वाला बड़ा चतुर इज्जतदार होता है।

कान की लम्बी लौर नीचे से गोलाई वाली

जिस मनुष्य की कान की लम्बी लौर नीचे से गोलाई लिये हो तो वह जीव धन की शक्ति प्राप्त करने वाला, व्यापार आदि से मान सहित आमदनी करने वाला और आर्थिक उन्नति करने के लिये बड़े २ प्रयत्न करने वाला, तथा मान व इज्जत प्राप्त करने वाला और कौटुम्बिक व गृहस्थिक शक्ति प्राप्त करने वाला तथा सुख भोग प्राप्त करने वाला और अधिक स्वार्थ सिद्धि करने में लगा रहने

वाला, धर्म के मुकाबले धन को महत्व अधिक देने वाला मानयुक्त होता है।

कान की गोल लौर उभरी हुई

जिस मनुष्य की कान की लौर गोल और उभरी हुई हो तो वह जीव ईश्वर को हृदय में बड़ा स्थान देने वाला तथा धर्म कर्म का यथा शक्ति पालन करने वाला व मानने वाला और शील सन्तोष का पालन करने वाला, हृदय में दया रखने वाला और बड़ा यश प्राप्ति करने वाला जीवन से सम्बन्धित प्रत्येक विषय पर बड़ी सावधानता से काम लेने वाला, एवं स्वार्थ और परमार्थ का यथोचित पालन करने वाला, बड़ा चतुर और गम्भीर प्रकृति वाला सुन्दरता चाहने वाला होता है।

कानों पर बाल

जिस मनुष्य के कान पर बाल होते हैं वह जीव ज्यादा होशियारी और गहरी चतुराई से काम निकालने वाला एवं अधिक नफा खाने वाला, और बड़ी चतुराई और सफाई से बड़े ऊँचाव की बातें कहने वाला तथा ऐश आराम के साधन भी पैदा करने वाला लौकिक तथा व्यावहारिक कर्मों में बड़ी दिलचस्पी रखने वाला और अपनी स्वार्थ सिद्धि के सामने सत्य असत्य की परवाह न करने वाला, समयानुसार रंग बदलने वाला, बड़ा अकलमंद होता है।

✻ बन्दर के कान की बनावट वाले कान ✻

जिस मनुष्य के बन्दर के कान की बनावट वाले कान हों तो वह जीव जरूरत से ज्यादा स्याना तथा बड़ी भारी होशियारी से काम करके फायदा उठाने वाला और दूसरों के चक्कर में न फँसने वाला किन्तु दूसरों को चक्कर में फँसाने वाला और काम, क्रोध, लोभ, मोह को अधिक स्थान देने वाला तथा भबकेबाजी से भी फायदा उठाने वाला, कुछ गृहस्थी की मुसीबतों के झंझट भी सहने वाला, मान और प्रभाव की कुछ न्यूनता पाने वाला, अवसर से ज्यादा नफा मारने वाला होता है ।

✻ लम्बी मूंछें ✻

जिस मनुष्य की मूंछें कान की तरफ लम्बी होती हैं वह जीव बहादुरी रखने वाला, शत्रु को दबाव पहुँचाने वाला और बड़ी २ मुसीबतों में भी हिम्मत से काम लेने वाला तथा मन के अन्दर बड़ी हेकड़ी रखने वाला, कुछ अधिक नफा खाने वाला और अधिक काम वासना रखने वाला तथा दिमाग में तेजी रखने वाला और मान प्रभाव पाने वाला तथा वाणी की कला में व शील में कुछ कमी पाने वाला तथा धार्मिक तत्व की आन्तरिक रीति से विशेष परवाह न करने वाला, अधिक स्वार्थ सिद्धि का चिन्तन करने वाला होता है ।

* छोटी मूछें *

जिस मनुष्य की छोटी मूछें हों तो वह जीव कायदे के अन्दर फायदे की शक्ति प्राप्त करने वाला तथा भलमनसाहत से काम निकालने वाला, बर्ताव में नरमाई और संतोष दिखाने वाला, थोड़ी तृष्णा और थोड़ा वैर करने वाला तथा ज्यादा छिपाव या ज्यादा हेकड़ी न करने वाला और बड़ी चतुराई से अपने मंतव्य को पूरा करने वाला होता है।

* नोंकदार उठी हुई मूछें *

जिस मनुष्य की नोंकदार उठी हुई मूंछें हों तो वह जीव बड़ा प्रभाव पाने वाला तथा किसी प्रकार बड़प्पन पाने वाला और किसी प्रकार शान गुमान के साधन पाने वाला तथा अपने अन्दर बहादुरी रखने वाला, भाग्यवानी पाने वाला और थोड़ी मेहनत से कुछ अधिक लाभ पाने वाला और अपने काम में तरक्की के साधन पाने वाला शत्रुनाशी उत्तम भोग की इच्छा रखने वाला होता है।

* दाहिनी मूंछों के पास तिल *

जिस मनुष्य की दाहिनी मूंछों के पास तिल हो तो वह जीव अपनी देहिक बुद्धिमानी से उन्नति करने के अच्छे साधन पाने वाला और मान प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला तथा किसी प्रकार की कुछ विशेषता रखने वाला और शत्रु पर

विजय प्राप्त के साधन पाने वाला, भाग्यवान प्रभावशाली होता है।

* मूंछों के बालों में गंजापन *

जिस मनुष्य की मूछों के बालों में गंज यानी उड़े हुए बाल हों तो वह जीव बनिया रीति की पद्धति से काम करने वाला, अर्थात् नरमाई से व गुप्त चतुराई से काम निकालने वाला और प्रभाव के मार्ग में कुछ कमी पाने वाला तथा स्त्री गृहस्थ सम्बन्धी मामलों में कुछ झंझट व दिक्कतें या कुछ नीरसता पाने वाला तथा कुछ कारबार में परतंत्रता भी पाने वाला व कुछ फिकरमंदी के साथ अपने कार्यों का संचालन करने वाला और कुछ छिपी युक्तियों से ज्यादा नफा खाने तथा थोड़ा भोग विलास प्राप्त करने वाला होता है।

* सफाचट मूंछें *

जिस व्यक्ति की सफाचट मूंछें हों तो वह जीव बाहरी अवस्था में अधिक भलमनसाहत दिखाने वाला अपनी यथार्थ शक्ति का कुछ छिपे तौर से स्तैमाल करने वाला, व्यवहार के और न्याय के स्थान में अपने मंतव्य और स्वार्थ का अधिक ख्याल रखने वाला तथा सज्जनता युक्त पद्धति का अपने को अनुयायी मानने वाला और शत्रुपक्ष में द्वन्द

युद्ध के लिये कदापि सामने न आने वाला, बड़ा चतुर होता है।

* लम्बी ठोड़ी बगैर गड्ढे की *

जिस मनुष्य की ठोड़ी लम्बी बगैर गड्ढे की हो तो वह जीव स्थिर विचार वाला, हृदय में शील दया और कोमलता की कुछ कमी पाने वाला, अपने मनमुरादी काम पर चलने वाला तथा किसी किस्म की विशेष कला और विशेष प्रेम का कुछ अभाव पाने वाला, कुछ नीरसता युक्त मान पाने वाला व कर्म को करने वाला, मेहनती अहंभावी होता है।

* ठोड़ी में गड्ढा नीचे की तरफ *

जिस मनुष्य की ठोड़ी में नीचे की तरफ गड्ढा हो तो वह जीव महान् शील संतोष रखने वाला, हृदय में बड़ी दया और कोमलता रखने वाला तथा सरल प्रेम करने वाला और ईश्वर की भक्ति करने वाला तथा हर एक वस्तु में सुन्दरता चाहने वाला आनन्दी होता है और बड़ों का व सज्जनों का दबाव अनिच्छा होने पर भी मानने वाला होता है।

* ठोड़ी में सामने गड्ढा *

जिस मनुष्य की ठोड़ी में सामने गड्ढा हो तो वह जीव अपने मनमें बड़ी रसिकता रखने वाला, भोग विलास की और ऐश्वर्य की प्राबल्यता चाहने वाला तथा गहरे स्वार्थ की

सिद्धि करने वाला, लौकिक में कुछ तरक्की और प्रभाव पाने वाला और दिखावटी भलमनसाहत और मीठेपन का खूब प्रयोग करने वाला और लौकिक सफलता पाने के लिये कोई खास कला रखने वाला होता है ।

* छोटी ठोड़ी *

जिस मनुष्य की ठोड़ी छोटी हो तो वह जीव थोड़ी शक्ति वाला और थोड़े मान वाला और थोड़ा प्रेम पाने वाला तथा कभी २ मान की हानि पाने वाला और थोड़ी दया वाला तथा मतलब को बड़ा मानने वाला, और त्याग तथा आदर्श पंथ का अनुसरण न कर सकने वाला एवं प्रकट में दब्बू नीति से काम लेने वाला तथा प्रभाव का अभाव पाने वाला होता है ।

* ठोड़ी और कंठ के दरमियान तालुए का लटकता हुआ मांस *

जिस मनुष्य के तालुए का मांस ठोड़ी और कंठ के दरम्यान वाला लटकता हुआ भारी सा हो तो वह जीव धन संग्रह करने की शक्ति व योजनायें प्राप्त करने वाला और धन की रक्षा व धन की उन्नति को जीवन का मूल सिद्धांत मानने वाला एवं अपना बड़ा स्वार्थ सिद्ध करने वाला तथा भाग्यवान समझा जाने वाला और आमदनी से प्रभाव पाने वाला होता है ।

❀ नासिका का दाहिना छिद्र लम्बा नोंकदार ❀

जिस मनुष्य की नासिका का छिद्र लम्बा नोंकदार दाहिनी तरफ का हो और बांया न हो तो वह जीव अपने दैहिक व्यक्तित्व से तरक्की करने वाला और समाज में अपनी बात का बड़ा भारी ख्याल रखने वाला और मनुष्यत्व तथा पुरुषत्व की शक्ति पाने वाला, एवं गृहस्थी के सुखों की कुछ कमी पाने वाला तथा स्त्री स्थान की लावण्यता सुख भोगादिक पक्ष के सम्बन्ध में मनके अन्दर कुछ नीरसता व कमी अनुभव करने वाला तथा आदर्श मार्ग का पथिक दूरदर्शी हिम्मतवर स्वतंत्र विचार वाला, गंध का पारखी होता है।

❀ नासिका का वाम छिद्र लम्बा नोंकदार ❀

जिस मनुष्य का वाम नासिका का छिद्र लम्बा नोंकदार हो और दाहिना न हो तो वह जीव गृहस्थिक सम्बन्धी मार्ग की सफलता पाने वाला, स्त्री भोगादिक लौकिक विषयों को महत्व देने वाला और छिपी युक्तियों से भी फायदा पाने वाला, शत्रु पक्ष में सन्मुख युद्ध के लिये तैयार न होने वाला तथा अपने मतलब की सिद्धि के सन्मुख बात की परवाह न करने वाला, आनन्दी जीवन सुख युक्त होता है।

❀ नासिका के दोनों छिद्र लम्बे और नोंकदार ❀

जिस मनुष्य की नासिका के दोनों छिद्र लम्बे और

आगे की तरफ नोंकदार हों तो वह जीव अपने देहिक व्यक्तित्व से तथा स्त्री स्थान के पक्ष से दोनों प्रकार से बड़प्पन पाने वाला और मान गुमान रखने वाला तथा कायदे कानून की बात को मानने वाला तथा उन्नति के मार्ग में आसानी से सफलतायें पाने वाला तथा प्रभाव पाने वाला और सुख प्राप्ति के अच्छे साधन पाने वाला तथा किसी खास किस्म के ढंग से रहने वाला, बात वाला, समझदार शानदार कार्य कुशल होता है ।

❀ नासिका के दोनों छिद्र छोटे ❀

जिस मनुष्य की नासिका के दोनों छिद्र छोटे हों तो वह जीव थोड़ी विद्या और थोड़े ज्ञान वाला तथा थोड़ा मान पाने वाला और किसी खास किस्म की कला से बंचित रहने वाला तथा अधिकांश लोगों का प्रिय न बन सकने वाला, और यथार्थ प्रेमियों की कुछ कमी पाने वाला तथा राज समाज के बड़े स्थानों में प्रवेश करने की न्यून शक्ति पाने वाला और अपने मतलब को सिद्ध करने का बड़ा ख्याल रखने वाला एवं संकुचित विचार वाला तथा भोगादिक सम्बन्धी रहन सहन खान पान सुगन्ध आदि मूल्यवान पदार्थों की कुछ कमी पाने वाला, मरे मन ठंडे हांसले वाला होता है ।

दांत पंक्ति-बद्ध इकसार व सफेद

जिस मनुष्य के दांत पंक्ति-बद्ध इकसार व सफेद हों तो वह जीव अधिकतर सुख प्राप्ति के मजबूत साधन पाने वाला, तथा सुन्दर भोजन पाने वाला और भोजन प्राप्ति की चिन्ता से मुक्त रहने वाला तथा बातों में सीधापन और भोलापन दिखाने वाला तथा मानयुक्त व सज्जनता युक्त रहने वाला और मीठा बोलने वाला होता है।

सामने के सब टेढ़े मेढ़े दांत

जिस मनुष्य के सब दांत सामने के टेढ़े मेढ़े हों तो वह जीव अधिकांश असत्य से व छिपाव से काम निकालने वाला तथा साधारण भोजन पाने वाला और शुद्ध ज्ञान की कमी पाने वाला तथा कुछ रूखा व कड़वा बोलने वाला, और मान की कुछ कमी पाने वाला तथा विद्या और वाणी की लावण्यता में कमी पाने वाला और मनमानी करने वाला होता है।

सामने के दांतों में छिद्र

जिस मनुष्य के सामने के दांतों के बीच २ में जरा २ सी जगह खाली होती है तो वह जीव बड़ा बुद्धिमान तथा बड़ी भारी चतुराई की व समझदारीकी बातें कहने वाला और सज्जनता का आचरण करने वाला और किसी खास विषय में बगैर संकोच के बहुतसी बातें कहते चले जाने वाला और

मुँह पर आई बात को न रोक सकने वाला तथा अपने में बड़प्पन का विषय रखने वाला होता है।

* सामने के ऊपर वाले दो बड़े दांत *

जिस मनुष्य के ऊपर वाले सामने के दो बड़े दांत हों तो वह जीव शक्ति के साथ बोलने वाला और कुछ मुफ्त की सी नफा या मुफ्त का सा धन भी पाने वाला तथा समयानुसार भोजन पाने वाला तथा मान पाने वाला और स्वार्थ की पक्की सिद्धि करने वाला तथा दुश्मन को दबाने वाला स्वाभिमानी होता है।

* इधर उधर के दो दांत सामने की ऊपर वाली पंक्ति में उठे हुए *

जिस मनुष्य के ऊपर वाली पंक्ति में इधर उधर के दो दांत सामने खड़े से होते हैं वह जीव बड़ा मेहनती कारबार करने वाला, इज्जत की वृद्धि पाने वाला और गहरी नफा प्राप्त करने वाला, मन माफिक भोजन पाने वाला तथा बड़ा प्रभाव रखने वाला और दुश्मन की परवाह न करने वाला और बड़ी चतुराई रखने वाला तथा अपनी स्वार्थ सिद्धि में ही मस्त रहने वाला एवं परमार्थ की परवाह न करने वाला व बड़ा बोझ सँभालने वाला, बड़ा हिम्मतवर तथा अपने को कुछ बड़ा मानने वाला तथा

हठधर्मी से व जिद्बाजी से काम करने वाला लापरवाह होता है।

* दांत के ऊपर एक दांत *

जिस मनुष्य का दांत के ऊपर एक अधिक दांत और चढ़ा हुआ हो तो वह जीव वजनदार बात कहने वाला और अपनी बात का बड़ा भारी ख्याल रखने वाला और दूसरों को अपनी बात के वशीभूत करने वाला और शत्रु को नीचा दिखाने वाला तथा प्रभाव की वृद्धि पाने वाला और अपने ऊपर बड़ों का थोड़ा साया पाने वाला, स्वतंत्रता युक्त हिम्मतवर और शब्द के मूल्य को समझने वाला होता है।

* ऊपर वाला सामने का एक दांत उठा हुआ और एक दांत दबा हुआ *

जिस मनुष्य के ऊपर वाली पंक्ति में एक तरफ का दांत उठा हुआ हो और एक तरफ का दबा हुआ हो तो वह जीव अपने अन्दर नरमाई और गरमाई की दोनों शक्ति रखने वाला अर्थात् क्रोध और शील दोनों को धारण करने वाला, किन्तु यदि दाहिना दांत बड़ा और बांया छोटा होगा तब तो क्रोध की प्रधानता रहेगी और शील की सामान्यता रहेगी और यदि दाहिना दांत छोटा और बांया दांत बड़ा हो तो शील की प्रधानता और क्रोध की सामा-

न्यता रहेगी और इस प्रकार के छोटे बड़े तथा उठे दबे दांतों वाला जीव अपने जीवन में उतार चढ़ाव तथा दुःख और सुख, उन्नति व अवनति के मार्ग में होकर निकलने वाला गूढ़ विवेकी तथा समयानुकूल मतलब सिद्ध करने वाला, बीच की श्रेणी वाला होता है।

* नीचे का होठ भारी *

जिस मनुष्य का नीचे का होठ भारी व कुछ बड़ा सा प्रतीत हो वह जीव शील शांति का उल्लंघन करने वाला, दूसरों के काम में नाक मारने वाला और दूसरे आदमियों को नीचा दिखाने की व चिढ़ाने की आदत पाने वाला तथा अपना प्रभाव और अपना प्रभुत्व ही ऊँचा देख सकने वाला तथा अपने हृदय में बड़ा अहंभाव रखने वाला तथा बात चीतों में अपने शब्दों को बहुत बढ़ा चढ़ाकर कहने वाला और किसी प्रकार इज्जत आबरू की मजबूती पाने वाला तथा बड़ा स्वार्थयुक्त होकर रहने वाला तथा कुछ मादक पदार्थों का सेवन करने वाला होता है।

* ऊपर का होंठ भारी *

जिस मनुष्य का ऊपर का होठ भारी हो तो वह जीव कुछ प्रभावशाली बातें कहने वाला तथा शब्दों को बड़े ढंग से बड़प्पन के साथ गम्भीरतायुक्त रीति से व्यवहार में लाने वाला तथा दूसरों को अपने शब्दों के द्वारा प्रभावित करने

के लिए चमत्कारिक शब्दों का प्रयोग करने की योजना बनाने वाला तथा सुन्दर भोजन पाने वाला तथा दूसरों को भलाई की सलाह देने वाला, मानयुक्त सज्जन होता है।

* दोनों होठ समान और सुन्दर *

जिस मनुष्य के दोनों होठ समान सुन्दर हों तो वह जीव बड़ी नपी तुली बातें कहने वाला, शब्दों में सत्यता का ध्यान रखने वाला, तथा गम्भीर विषय की बातों को आदर देने वाला और गाली गलौज के व्यवहार को बहुत बुरा समझने वाला तथा अन्दरूनी तौर से दूसरों के हित में ही सुन्दरता देखने वाला और कोमल शब्दों का प्रयोग करने वाला और ताजा स्वच्छ सतोगुणी भोजन पाने वाला विचारवान होता है।

* दोनों होठ पतले *

जिस मनुष्य के दोनों होठ पतले हों तो वह जीव साधारण स्थिति वाला, साधारण भोजन पाने वाला तथा साधारण रीति से बातचीत करने वाला और थोड़े ज्ञान वाला दूसरे की बातों के सामने दबाव मानने वाला और अपने शब्दों का कोई खास मूल्य न समझने वाला तथा सुख के साधनों में कुछ कमी का योग पाने वाला कुछ शीलयुक्त होता है।

❀ दाहिने गाल पर मस्सा ❀

जिस मनुष्य के दाहिने गाल पर मस्सा हो तो वह जीव धन व आमदनी को सुख शक्ति को प्राप्त करने वाला तथा आमदनी के मार्ग से भाग्यवान समझा जाने वाला और कुछ मुफ्त का सा कमा कमाया धन भी प्राप्त करने वाला, बहुत मुनाफा खाने वाला तथा गृहस्थ सुख के साधनों में कुछ त्रुटि पाने वाला और धर्म के मुकाबले में धन को अधिक महत्व देने वाला तथा हर प्रकार से स्वार्थ की अधिक पूर्ति करने वाला बड़ा होशियार होता है।

❀ बांये गाल पर मस्सा ❀

जिस मनुष्य के बांये गाल पर मस्सा हो तो वह जीव अपने मनमें व जीवन में रसिक मिजाजी पाने वाला तथा कुछ असफलतायें पाने वाला और धन को अधिक खर्च करने वाला तथा कुछ परतंत्रतायुक्त रहने का योग भीपाने वाला और लौकिक कार्यों को ही महत्व देने वाला और अपने स्वार्थ सिद्धि के मुकाबले में परमार्थ की परवाह न करने वाला तथा धर्म का साधारण न्यूनतम ध्यान करने वाला, भोगविलास को प्रधानता देने वाला होता है।

❀ दोनों गालों पर मस्सा ❀

जिस मनुष्य के दोनों गालों पर मस्सा हो तो वह जीव अपने जीवन में बार २ उन्नति व अवनति के चक्कर

में फँसने वाला और कभी २ मुफ्त की सी आमदनी का योग पाने वाला तथा कभी २ पैसे की लाचारी का सा योग पाने वाला और कभी आजादी पाने वाला और कभी कुछ बन्धनसा पाने वाला और धन कमाने को और धन खर्च करने को दोनों को ही महत्व देने वाला तथा गृहस्थ सम्बन्धी दुःख सुख के कुछ झंझट युक्त योग पाने वाला, औसत दर्जे का सामान्य धर्म वाला स्वार्थयुक्त तथा अपने विचारों में सदैव उतार चढ़ाव में रहने वाला होता है।

❀ सारे बदन पर बाल ❀

जिस मनुष्य के सारे शरीर पर अधिकतर बाल होते हैं वह जीव काम वासना भोग विलास को अधिक महत्व देने वाला और देह सम्बन्धी हर एक प्रकार के खान पान रहन सहन की उन्नति का बड़ा प्रयत्न करने वाला तथा लौकिक सफलताओं के सामने पारलौकिक व धार्मिक विचारों को बहुत थोड़ा महत्व देने वाला तथा खूब मेहनत व उद्योग में लगा रहने वाला और देह सम्बन्धी भोगादिक ऐश्वर्य को कभी २ विशेष रूप से प्राप्त करने वाला और बड़ी २ गहरी कूट नीतियों से भी फायदे और उन्नति की विशेष योजनायें बनाने वाला तथा गहरी स्वार्थ सिद्धि में लगा रहने वाला होता है।

* ठोड़ी और कंठ के बीच तालुए का मांस लटकता हुआ *

जिस मनुष्य की ठोड़ी और कंठ के बीच तालुए का मांस लटकता हुआ हो तो वह जीव धन की वृद्धि करने में लगा रहने वाला और भूमि व धन की शक्ति प्राप्त करने वाला तथा विद्या की कुछ कमी पाने वाला, किन्तु बातों में बड़ी भारी चतुराई से सदैव काम निकालने वाला और बाहरी सज्जनता को अच्छी तरह बर्तने वाला तथा अपनी स्वार्थ सिद्धि में बड़ा चौकस रहकर काम करने वाला तथा कामवासना को मनमें रखने वाला, और सुख प्राप्ति के मजबूत साधन पाने वाला और अपने निकट दायरे में मान पाने वाला, तथा मनमें कुछ सुख का अनुभव करते रहकर भी घरेलू झंझटों में फँसाव पाने के कारण सुख की कुछ कमी महसूस करने वाला एवं कुछ अपने अन्दर बड़प्पन मानने वाला होता है।

* अधिक बाहर निकला हुआ कंठ *

जिस मनुष्य का कंठ बाहर की तरफ अधिक निकला हुआ हो तो वह जीव देह में कमजोरी पाने वाला व मेहनत मजूरी करके काम चलाने वाला और अधिक कामवासना रखने वाला लौकिक व गृहस्थी झंझटों में पूरा फँसा रहने वाला और अपनी बातों से व आवाज से फायदा उठाने

वाला तथा सुन्दरता में आसक्ति रखने वाला, धर्म का न्यूनतम पालन करने वाला मनमौजी हिम्मतवर होता है।

※ गर्दन के पीछे मांस की सिलवटें ※

जिस मनुष्य की गर्दन के पीछे अधिक मांस होने से सिलवटें पड़ती हों तो वह जीव बहुत बड़ी जिम्मेदारियों के काम को सँभालने वाला, अर्थात् वजनदार काम करने वाला, अधिक मुनाफा खाने वाला, तथा मनमें मग्न रहने वाला, तथा बड़ी दौड़ धूप करने वाला और अपने सिद्धान्त मार्ग पर अड़कर मुस्तैदी से फायदा उठाने वाला तथा दया धर्म को थोड़ा स्थान देने वाला, और अपनी शक्ति की उन्नति और रक्षा करने में लगा रहने वाला तथा मान पाने वाला इज्जतदार होता है।

※ पतली और लम्बी गर्दन ※

जिस मनुष्य की पतली और लम्बी गर्दन हो तो वह जीव बहुत दूर की बातों पर अधिक ध्यान देने वाला और अपने घर की व नजदीक की चीज को कम महत्व देने वाला तथा थोड़ा धन और थोड़ी इज्जत पाने वाला तथा आशा और सन्तोष पर कायम रहने वाला और मौका पाकर अच्छा लाभ उठाने वाला तथा थोड़ी जिम्मेदारी के बोझ को सँभालने वाला तथा अपने अन्दर अपनी समझ से

बड़ी सतर्कता से काम करने वाला, बड़ा स्वार्थ युक्त होता है।

* छोटी और मोटी गर्दन *

जिस मनुष्य की छोटी और मोटी गर्दन हो तो वह वह जीव बड़ा सतर्क रहने वाला, दूसरों के चक्कर में न फँसने वाला, तथा अपने मतलब की सिद्धि करने वाला, अपने अन्दर हिम्मत की बड़ी मजबूती रखने वाला, और छिपी हुई तरकीबों से काम निकालने वाला, एवं मौका पाकर शीघ्रता से काम बनाने वाला तथा मान प्राप्त करने वाला, शक्तिवान होता है।

* चौड़ा और उठा हुआ सीना *

जिस मनुष्य का चौड़ा और उठा हुआ सीना हो तो वह जीव अपने अन्दर जीवन व्यतीत करने की धन शक्ति तथा बाहुबल की शक्ति सुचारु रूप में प्राप्त करने वाला और स्वतंत्रता युक्त एवं मानयुक्त रहने वाला और शत्रु को परास्त करने वाला तथा प्रभाव से अधिक फायदा उठाने वाला तथा मुसीबत में बड़ा धैर्य धारण करने वाला एवं बड़ी भारी हिम्मत रखने वाला तथा अपने मार्ग में दृढ़ता पूर्वक कार्य करने वाला और सुख भोग प्राप्त करने वाला, उन्नति युक्त विजयी होता है।

* छोटा और पतला सीना *

जिस मनुष्य का छोटा और पतला सीना हो तो वह जीव थोड़े चित्त वाला तथा थोड़ी हिम्मत वाला और थोड़ी जुम्मेदारी के बोझ को सँभालने वाला तथा किसी प्रकार परतंत्रता युक्त होकर या दबकर रहने वाला और थोड़ी आमदनी पाने वाला व थोड़ा प्रभाव पा सकने वाला, सामान्य जीवन होता है ।

* सीने के ऊपर बाल *

जिस मनुष्य के सीने के ऊपर बाल होते हैं वह जीव अपनी दिनचर्या में जीवन व्यतीत करने को सहायक आदमी और अन्न वस्त्र व सहायक वस्तु, धन आदि भोग्य पदार्थ सरलता पूर्वक पाते रहने के कारण से हृदय में हिम्मत पाने वाला तथा जीवन की गुजर करने के लिए एवं हिम्मत को कायम रखने के लिए कोई न कोई तरकीब निकालते रहने वाला तथा शास्त्रोक्त रीति से समय व्यतीत करने की परवाह न करने वाला, एवं स्वार्थ सिद्धि करने में बहादुर होता है ।

* बगैर बालों का सीना *

जिस मनुष्य के सीने पर जरा भी बाल नहीं होते हैं वह जीव अपनी हिम्मत को कायम रखने के लिये दूसरों के सहारे की परवाह न करने वाला तथा अपने निश्चित

किये हुए मार्ग पर ही चलकर मानने वाला तथा कभी २ असाधारण शक्ति और असाधारण हिम्मत से काम लेने वाला तथा सहायक मनुष्यों की व वस्तुओं की कमी पाने वाला और प्रायः मुसीबतों से टकराते रहने के कारणों से परिपक्वता प्राप्त करते रहने वाला, और स्वतंत्रता को ही मूल महत्व देने वाला तथा कुदरती सहायताओं से मान गौरव आदि की वृद्धि और रक्षा पाने वाला, स्वाभिमानी निडर स्वभाव का होता है।

* कंठ और ठोड़ी के बीच पिचका हुआ तालुआ *

जिस मनुष्य की ठोड़ी और कंठ के बीच तालुए का मांस ऊपर को उठा हुआ हो तो वह जीव जीवन निर्वाह करने की मामूली शक्ति पाने वाला और अपनी स्वार्थ सिद्धि करने के सम्बन्ध में मामूली बातें कह सकने वाला तथा थोड़ी चतुराइयों वाला तथा थोड़ी विद्या बुद्धि रखने वाला, एवं कुछ नीरस जीवन पाने वाला होता है।

* पीठ पर मस्सा *

जिस मनुष्य या स्त्री की पीठ पर मस्सा हो तो वह जीव अप्रशंसनीय मार्ग का अनुसरण करके स्वतंत्रता प्राप्त करने वाला तथा अपने समस्त बन्धु बान्धवों से मुक्तियुक्त होकर रहने वाला और अपनी मर्जी के अनुसार ही चल कर मानने वाला, बड़ा दुःसाहसी होता है।

❋ कंठ और ठोड़ी के बीच सामान्य तालुआ ❋

जिस मनुष्य का कंठ और ठोड़ी के बीच सामान्य तालुआ हो तो वह जीव अमीरी और गरीबी के दरम्यान जीवन व्यतीत करने वाला तथा बहुत कायदे की बातें कहने वाला तथा बड़ी चतुराई रखने वाला और दूसरे लोगों से साधारण प्रेम व निष्कपटता का सा व्यवहार रखने वाला और भलाई बुराई का ख्याल रखकर स्वार्थ सिद्ध करने वाला होता है।

❋ पेट की गहरी नाभी ❋

जिस मनुष्य की पेट की नाभी गहरी गड्ढेदार होनी है वह जीव बड़े भारी गम्भीर विषय को बातें सोचने वाला और गम्भीर विषय को ही महत्व देने वाला तथा धर्म सम्बन्धी पारलौकिक विषय का ध्यान रखने वाला तथा लौकिक विषय की कम परवाह करने वाला और तत्व की खोज करने वाला और गूढ़ विषय में व धार्मिक विषय में सफलता पाने वाला और अपने कार्यों में बड़ी दूरंदेशी से काम लेने वाला और सदैव नियम से सात्वकी भोजन पाने वाला तथा लड़कपन की व ओछी आदत को बहुत बुरा समझने वाला और मार्मिक बातों की बड़ी लम्बी याद रखने वाला, गूढ़ ज्ञानी होता है।

❀ पेट की भरी हुई नाभी ❀

जिस मनुष्य की पेट की नाभी में गडढा नहीं होता वह जीव सदैव लौकिक सफलता और स्वार्थ को ही महत्व देने वाला तथा पारलौकिक व धर्म सम्बन्धी विषय को न्यून दृष्टि से समझने वाला तथा गम्भीर विषय की बातों को अवहेलना की दृष्टि से देखने वाला तथा अपने खाने पीने, रहन सहन, सुख प्राप्ति के साधनों को ढूंढ़ने वाला स्वार्थयुक्त होता है।

❀ पेट की उभरी हुई नाभी ❀

जिस मनुष्य की पेट की उभरी हुई नाभी हो तो वह जीव महान् स्वार्थ सिद्धि करने में लगा रहने वाला, और अपने स्वार्थ लक्ष्य के सामने दुनियां की बुराई भलाई की परवाह न करने वाला और अपने पेट में बहुतसी बातों को छिपाकर रखने वाला तथा हँसने हँसाने वाला, और अच्छा भोजन पाने वाला और बहुतसी बातें समय २ पर बनाकर कहने वाला तथा मुफ्त की सी नफा और धन चाहने वाला मस्त होता है।

❀ मोटा पेट ❀

जिस मनुष्य का पेट मोटा होता है वह जीव बहुत नफा खाने वाला खूब धन की पैदा में लगा रहने वाला और खूब भोजन करने वाला और अधिक स्वार्थ सिद्ध

करने वाला तथा बड़ी भारी मतलब के हेतु सफाई की बातें करने वाला और अधिक आराम चाहने वाला तथा मान प्राप्त करने वाला, अपने नियत स्थान पर अधिकतर जमने वाला और लौकिक सफलताओं के सामने धार्मिक सफलताओं की परवाह न करने वाला, मस्त लापरवाह होता है।

❀ पतला पेट पिचका हुआ ❀

जिस मनुष्य का पेट पिचका हुआ व पतला हो तो वह जीव थोड़ी जीविका पाने वाला, संतोष वृत्ति से रहने वाला, तथा थोड़ा भोजन पाने वाला तथा थोड़ा प्रभाव पाने वाला, तथा दूसरे लोगों से कुछ दबासा पाने वाला व मान की कुछ कमी पाने वाला तथा सुख भोगादिक की कुछ कमी पाने वाला, और कुछ शांति प्राप्त करने वाला तथा ईश्वर में भरोसा मानने वाला तथा कोमलता व नरमाई रखने वाला होता है।

❀ पेट पर मांस की तीन सिलवटें ❀

जिस मनुष्य के पेट पर मांस की तीन सिलवटें पड़ती हों तो वह जीव बड़ा भाग्यवान, बड़ा नीतिवान और ऐश्वर्य प्राप्त करने वाला, तथा बड़ा मान व प्रभाव पाने वाला और उत्तम भोग पदार्थ प्राप्त करने वाला तथा न्याय चाहने वाला, तथा शील, सन्तोष, व शान्ति को धारण करने वाला तथा इच्छित भोजन पाने वाला और दूसरों

का प्रिय बनकर रहने वाला और दूसरों को सुखी करने वाला व हँसने हँसाने वाला बड़ा विचारवान होता है।

* दाहिने पेट या छाती पर तिल या मस्सा *

जिस मनुष्य के दाहिने पेट पर तिल या मस्सा हो तो वह जीव खूब सुन्दर २ भोजन पाने वाला और समयानुसार मन पसन्द भोजन करने वाला होता है और यदि दाहिनी छाती पर तिल या मस्सा हो तो वह जीव बड़ो भारी हिम्मत वाला तथा धैर्य की महान् शक्ति से अपूर्व लाभ पाने वाला बहादुर मिजाज होता है।

* दाहिनी भुजा अधिक लम्बी *

जिस मनुष्य की दाहिनी भुजा कुछ अधिक लम्बो हो तो वह जीव अपने हाथ से कोई महान् कार्य की शक्ति का परिचय देने वाला और दिलचस्पी के साथ जिस काम में हाथ डाल देगा उसी में सफलता पाने वाला तथा जिस दुश्मन पर हाथ उठा देगा वह कितना ही बड़ा क्यों न हो उस पर बिजय पाने वाला तथा लेखनशैली में प्रभाव पाने वाला, बहादुर विजेता स्वतन्त्रतायुक्त होता है।

* दाहिनी कलाई पर मस्सा और तिल *

जिस मनुष्य की दाहिनी कलाई पर मस्सा और तिल हो तो वह जीव किसी प्रकार के लेख की शक्ति से बड़ा यश प्राप्त करने वाला तथा सुन्दर दस्तखत बनाने वाला और

पत्र द्वारा दूसरे व्यक्तियों पर प्रभाव डालने वाला तथा किसी सुन्दर ग्रन्थ की रचना करने वाला तथा सुन्दर सजावट करने वाला, यदि वास्तविक रूप से किसी काम में हाथ डाले तो असम्भव को भी सम्भव बनाने वाला तथा दूसरे के लिखे शब्दों के मुकाबले में अपने लिखे शब्दों का मान पाने वाला तथा परीक्षा में ऊँचे नम्बरों से पास होने वाला तथा दान पुण्य करने वाला सत्कर्मी होता है।

* उँगलियां सूखी हड़ीली छिरछिरी *

जिस मनुष्य की पैरों की उँगलियां सूखी हड़ीली छिरछिरी हों तो वह मनुष्य स्त्री हो या पुरुष दरिद्र भोग का लक्षण अर्थात् धनहीनता प्राप्त करता है ।

* दाहिनी भुजा कुछ छोटी *

जिस मनुष्य की दाहिनी भुजा कुछ छोटी हो तो वह जीव कुछ परतन्त्रता पाने वाला तथा सामान्य कर्म करने वाला तथा आदर्श कर्म न कर सकने वाला और कुछ अप्रशंसनीय कर्म भी कर सकने वाला और दस्तखतों की सुन्दरता में व पत्र लेखनशैली आदि की सुन्दरता में कमी पाने वाला और दान पुण्य सुन्दर शुभ कर्मों की कमी पाने वाला तथा परीक्षामें न्यूनता पाने वाला कुछ डरपोक स्वभाव होता है ।

* हाथ की अँगुलियां अधिक हों *

जिस मनुष्य की हाथ की अँगुलियां १० से ज्यादा हों तो वह जीव अपने चित्त से ज्यादे नफा खोजने वाला तथा ज्यादे नफा खाने वाला और हर एक काम काज की ज्यादे छान बीन करने वाला एवं बाल की खाल निकालने वाला और अपने हाथ के किये हुए काम को ही विशेष महत्व देने वाला तथा दूसरे के काम में कमी देखने वाला, स्याना आदमी होता है ।

* हाथों की अँगुली सिरे पर से पतली *

जिस मनुष्य की हाथों को अँगुली सिरे पर से पतली हों तो वह जीव कामवासना, भोगविलास, प्राप्त करने वाला, बड़ी सावधानी से सदैव अपना काम निकाल लेने वाला और दूसरे व्यक्तियों पर अपना प्रभाव डालकर फायदा उठाने के लिये बड़ी पेंतरेवन्दी से व हेर फेर से काम लेने वाला और आहिस्ता २ अपने स्वार्थ की नीम जमाते रहने वाला बड़ा चतुर अवसरवादी एवं हृदय में कोमलता और कठोरता को रखने वाला तथा उतार चढ़ाव के कर्म करने वाला होता है ।

* हाथ की अँगुलियां सिरे पर तक एकसी मोटी *

जिस मनुष्य के हाथ की अँगुलियां सिरे तक एकसी मोटी होती हैं वह जीव एकसा कर्म करने वाला अर्थात्

अपने हाथसे कियेगये कर्मका अगाड़ी पिछाड़ी तकका पूरा२ ख्याल रखने वाला तथा दिखाने और करनेके कर्ममें अन्तर पैदा न होने देने वाला और काम, क्रोध, लोभ, मोह को सामान्यतम स्थान देने वाला तथा उज्वल कर्म करने वाला यशस्वी मानयुक्त होता है।

* हाथ का अंगुष्ठ छोटा और मोटा *

जिस मनुष्य का हाथ का अंगुष्ठ छोटा और मोटा हो तो वह जीव अपने मतलब को सिद्ध करने का पूरा २ ध्यान रखकर काम करने वाला और बड़ी सज्जनतायुक्त पेचीदा चतुराइयों से काम निकालने वाला तथा स्वार्थ के सन्मुख परमार्थ की परवाह न करने वाला और मतलब बनाने के लिये छिपाव झूंठ व चतुराई आदि कृत्यों को स्तैमाल करने वाला, तथा मान प्रतिष्ठा गौरव आदि का सामान्य ध्यान रखने वाला, बड़ा सतर्क होशियार होता है।

* हथेली का मांस कठोर *

जिस मनुष्य की हथेली का मांस कठोर होता है वह जीव अपने हाथ के दैनिक परिश्रम से रोजगार करने वाला तथा मेहनती कर्म से जीविका चलाने वाला और परमार्थ कर्म से वंचितसा रहने वाला. लौकिक स्वार्थों की पूर्ति करने में लगा रहने वाला और दया की कमी पाने वाला और स्वार्थ के कार्यों को बड़ी मजबूती से पकड़ने वाला

तथा किसी हिस्से में निन्दा स्तुति की कम परवाह करने वाला, हठीला होता है।

* हथेली का मांस मुलायम *

जिस मनुष्य की हथेली का मांस मुलायम हो तो वह जीव कठोर परिश्रम से मुक्त रहकर थोड़े परिश्रम द्वारा अपना काम व जीविका चलाने वाला, सुख प्राप्त करने वाला, हिंसा वृत्ति से बचने वाला, कोमल कर्म करने वाला, सब वस्तुओं को बड़ी हिफाजत से रखने वाला, और किसी प्रकार किसी रूप से दूसरों को सुख देने वाला, व आराम और शांति चाहने वाला होता है।

* हाथ के नाखूनों की जड़ में अर्ध चन्द्राकार सफेदी *

जिस मनुष्य के हाथ के नाखूनों की जड़ में अर्ध चन्द्राकार सफेदी हो तो वह जीव बड़ी कला पूर्ण नीति से कारवार या रोजगार करने वाला और उज्वल कर्म करने वाला तथा अपने हाथों की मेहनत से दूसरों पर प्रभाव पाने वाला, दूसरों के अहित कर्म से व दूसरों की हिंसा से बचने वाला तथा यश और मान पाने वाला और बड़ा स्वाभिमान रखने वाला तथा सुन्दरता को बड़ा पसंद करने वाला एवं चतुराइयों से फायदा पाने वाला होता है।

* हाथ के नाखूनों में लम्बी लकीरें *

जिस आदमी के हाथ के नाखूनों में लम्बी लकीरें हों

तो वह जीव देह में व वीर्य में दुर्बलता पाने वाला, चिन्ता ग्रसित रहने वाला, भोग विलासता की कमी पाने वाला, थोड़े खर्च से काम चलाने वाला और सहायक मनुष्यों की व सहायक वस्तुओं की कमी पाने वाला और आराम प्राप्ति के कार्यों में बार २ विघ्न पाने वाला होता है।

❀ हाथ के चिकने और सुर्ख नाखून ❀

जिस मनुष्य के हाथों के चिकने और सुर्ख नाखून हों तो वह जीव अच्छी तन्दुरुस्ती पाने वाला, सुख प्राप्त करने वाला तथा अच्छा भोजन पाने वाला, और सुख पूर्वक खर्च चलाने वाला तथा परेशानियों से प्रायः बचाव पाने वाला और भोगविलास प्राप्त करने वाला तथा मन के अन्दर मजबूती और निर्भयता रखने वाला होशियार उत्साही होता है।

❀ छाती में उठा हुआ कुब्ब ❀

जिस मनुष्य की छाती में बाहर की तरफ कुब्ब निकला हुआ हो तो वह जीव अनुचित रूप से अपनी शक्ति का प्रयोग करने वाला और बेजा तौर से गुस्सा प्रकट करने वाला तथा जरूरत से ज्यादा हिम्मत दिखाने वाला और हरसमय अपने प्रभावकी वृद्धिके ही कारण पैदा करनेमें लगा रहने वाला और वास्तविक शक्ति की कमी पाने वाला तथा यश की कमी पाने वाला, व शील शांति और सन्तोष की

कमी पाने वाला व मेहनत करने वाला, हेकड़ मिजाज होता है।

❀ पीठ में उठा हुआ कुब्ब ❀

जिस मनुष्य की पीठ में कुब्ब उठा हुआ हो तो वह जीव दूसरे की शक्ति का कुछ नाजाइज फायदा उठाने वाला और हठधर्मी व जिद्दबाजी से भी दूसरे व्यक्तियों का सहारा प्राप्त कर लेने वाला और वास्तविक सहारे की कमी पाने वाला तथा मेहनत से काम करने वाला, शान्ति और चैन की कमी पाने वाला तथा नाउम्मेदियों के समय में कभी २ मुफ्त का सा सहारा व लाभ पाने वाला, व मुसीबत सहने को अधिक शक्ति रखने वाला, कुछ लापरवाह होता है।

❀ हाथ में भाग्य की महीन रेखायें ❀

जिस मनुष्य के हाथ में भाग्य की रेखा बहुत महीन पतली होती हैं तो वह जीव कुदरती लाइन से तरक्की करने वाला तथा अपने हृदय में सतोगुणी विचारों को धारण करने वाला तथा पुरुषार्थ द्वारा कार्य करते रहने पर भी पुरुषार्थ को महत्व न देने वाला और तकदीर पर भरोसा मानने वाला तथा ईश्वर में विश्वास रखने वाला और समय समय पर ईश्वरीय शुभ सहायतायें पाते रहने वाला, और बाहरी जगत् की सी दौड़धूप, व धन कमाने के महान् परिश्रमी कार्य न कर सकने वाला, तथा शनैः शनै उन्नति

का मार्ग पाने वाला तथा यश और मान पाने वाला, संतोष वृत्ति से युक्त थोड़ी मुनाफ़ा खाने वाला, दैवी कृपा की बाट देखने वाला होता है।

❀ हाथ में भाग्य की मोटी रेखायें ❀

जिस मनुष्य के हाथ में भाग्य की मोटी रेखा होती हैं तो वह जीव खूब मेहनत के साथ धन कमाने में लगा रहने वाला और अपने बल पुरुषार्थ का बड़ा भरोसा मानने वाला तथा ईश्वर को मनाते हुए भी, ईश्वर में कम भरोसा करने वाला और उन्नति पर पहुँचने के लिये कठिन से कठिन कार्यों को करते रहने वाला तथा बड़ी दौड़धूप व हिम्मत से काम लेने वाला, और अधिक मुनाफ़ा खाने वाला, सन्तोष को कम महत्व देने वाला और अपनी स्वार्थ सिद्धि के सन्मुख न्याय अन्याय की थोड़ी परवाह करने वाला होता है।

❀ धन की रेखा गुरु के स्थान पर ❀

जिस मनुष्य के हाथ में धन की रेखा गुरु के स्थान पर चढ़ती है तो वह जीव बहुत बड़ा कारबार करने वाला, बहुत धन प्राप्त करने वाला तथा बड़ा भारी प्रभाव और प्रभुत्व प्राप्त करने वाला, तथा मान सन्मान पाने वाला, बड़ा ऐश्वर्य वैभव पाने वाला तथा मकान, जायदाद, सवारी, नौकर, चाकर आदि की शक्ति व खान पान, वस्त्र, आभूषण

आदि की शक्ति प्राप्त करने वाला तथा ईश्वर और धर्म में श्रद्धा रखने वाला तथा बहुत बड़ी २ कानून कायदे की बातें कहने वाला, सदाचार परोपकार आदि में मन रखने वाला, पूजनीय होता है।

* धन की रेखा शनि के स्थान पर *

जिस मनुष्य के हाथ में धन की रेखा शनि के स्थान पर चढ़ती है वह जीव बड़ी मेहनत के योग से धन कमाने वाला, और उन्नति को प्राप्त करने के लिये महान् परिश्रम करते रहने वाला और अपने स्वार्थ की सिद्धि करने के लिए सत्य असत्य की परवाह न करने वाला तथा लाभ प्राप्ति के हेतु निन्दा स्तुति, मान अपमान, की लापरवाही सी करते हुए, बड़ी तरकीबों से काम निकालने वाला और अपने सिद्धान्त पर खूब अड़कर व डटकर काम करने वाला तथा बड़ी २ कठिनाइयों का सामना पाने वाला तथा यश की कमी पाने वाला तथा ईश्वर और धर्म की तरफ से लापरवाही रखने वाला, सदैव स्वार्थ बुद्धि हिम्मतवर होता है।

* धन की रेखा सूर्य के स्थान पर *

जिस मनुष्य की धन की रेखा सूर्य के स्थान पर जाती है तो वह जीव बड़े चमत्कारिक कार्य से धन कमाने वाला और दूसरे व्यक्तियों पर अपना प्रभाव रखने वाला तथा

ज्ञान और विज्ञान की खोज प्राप्ति करने वाला, एवं आकर्षणिक कार्यों से फ़ायदा उठाने वाला तथा बहुत लम्बी चौड़ी दूर २ तक की बातें सोचने वाला तथा यश प्राप्त करने वाला, तथा शत्रु को दमन करने पाला, तथा परोपकार का ध्यान रखने वाला होता है, और यदि धन की भाग्य रेखा चन्द्रमा के मूल स्थान से चलकर सूर्य के स्थान पर आखीर तक पहुँच जाय, तब वह मनुष्य देश देशान्तरों में नाम पाता हुआ अमर कीर्ति प्राप्त करने वाला होता है।

* धन की रेखा बुद्ध के स्थान पर *

जिस मनुष्य की धन रेखा बुद्ध के स्थान पर चढ़ती है वह जीव विद्या और विवेक की शक्ति से धन प्राप्त करने वाला तथा अपनी चतुराइयों से दूसरे मनुष्यों को मोहित करने वाला और हँसने हँसाने का स्वभाव पाने वाला तथा हृदय में व विचारों में कोमलता रखने वाला, और दूरंदेशी की बातें सोचने वाला तथा बड़ी कुशलता युक्त नीति के द्वारा अपने कार्य को सँभालने और संचालन करने वाला व लौकिक उन्नति को ही मूल मंत्र समझने वाला, स्वार्थ युक्त होता है।

* धन की रेखा शनि के नीचे से सूर्य के स्थान पर *

जिस मनुष्य की धन की रेखा शनि के स्थान के नीचे

से सूर्य के स्थान पर जाती है तो वह जीव बड़े कठिन परिश्रम से, विज्ञान की तरक्की करके भाग्य की उन्नति पाने वाला, और प्रभावशाली कर्म के द्वारा धन प्राप्त करने वाला, तथा नाम और ख्याति पाने वाला, बहुत तीक्ष्ण चमत्कारिक कर्म करने वाला और मान सन्मान प्राप्त करने वाला तथा शत्रु को परास्त करने वाला तथा बहुत अधिक दूर तक की बातें सोचने वाला तथा पारलौकिक व ईश्वरीय सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करने वाला और स्वाभिमान व अपने व्यक्तित्व की पूर्ण रक्षा रखने वाला, धैर्य की शक्ति रखने वाला, प्रभावशाली होता है।

* धन की रेखा का चन्द्र स्थान से प्रादुर्भाव *

जिस मनुष्य की धन की रेखा चन्द्रमा के स्थान से निकलती है वह जीव मनोयोग की लाइन से धन प्राप्त करने वाला तथा धन की प्राप्ति और धन की वृद्धि करने के लिये सदैव मन की शक्ति का प्रयोग करने वाला तथा भाग्य के सम्बन्ध में उतार चढ़ाव व खुशी और रंज का बख्तन व बख्तन योग पाने वाला तथा मानसिक विचारों की उत्तेजना शक्ति के द्वारा बड़े २ कठिन कार्यों को भी पूरा करने की शक्ति पाने वाला और कभी २ मानसिक विचारों की कमजोरी के कारण से ही मामूली से मामूली

कार्यों को भी पूरा करने में हिम्मत हार जाने वाला, विचार आधीन चलने वाला होता है।

* धन की दो रेखायें *

जिस मनुष्य की धन की दो रेखायें होती हैं वह जीव दो प्रकार की लाइन से फायदा उठाने वाला और दो प्रकार के ही मार्ग में उन्नति करने वाला तथा दोनों रेखायें जिस २ ग्रह के स्थान पर जाती हैं वह रेखायें उसी-उसी प्रकार का फल देती हैं जैसा कि और २ ग्रहों के स्थान पर जाने का फल पहिले ही लिखा जा चुका है अतः विभिन्न प्रकार से सोचते रहना चाहिए।

* रेखा नं० १ *

जिस मनुष्य की रेखा नं० १ वाली लाइन अगर दोनों तरफ से कांटेदारसी बनी हुई हो तो वह मनुष्य अपने जीवन की दिनचर्या में बड़े २ सङ्कटों को सहन करने वाला और मुसीबतों के मार्ग से गुजरने वाला होता है और यदि जड़ में कांटे हों और आगे साफ हो तो बचपन में बहुत दिक्कतें सहने वाला और जवानी से फायदा व सुख उठाने वाला और यदि ऊपर की तरफ से साफ हो और नीचे की तरफ से छोटी २ रेखायें नोंक की सी सकल में निकल रही हों तो वह जीव मानसिक कष्ट अधिक सहने वाला और बाहरी स्थिति में हमेशा ठीक सुन्दर दिखलाई देने वाला

और अन्दरूनी देह के अन्दर कुछ कमजोरी या कुछ रोग आने वाला होता है, और यदि नीचे से साफ़ हों और

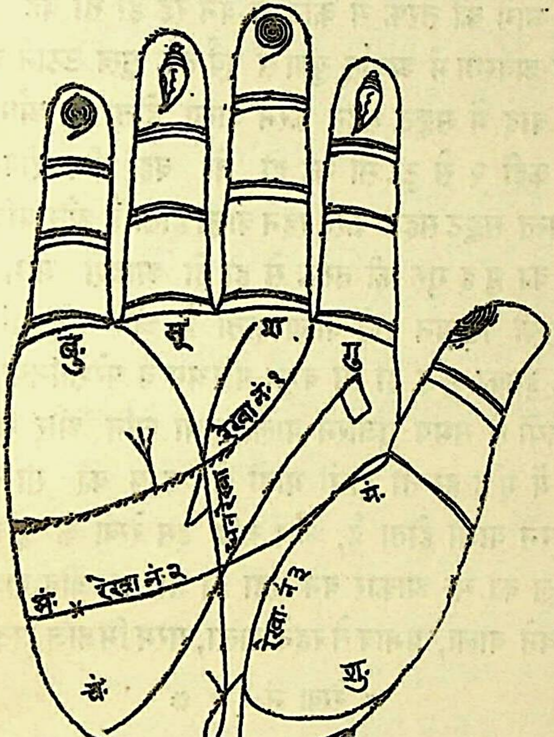
बु
सू
श
गु
रेखा नं॰ १
भाग्यरेखा
मं॰
रेखा नं॰ २
मं॰
रेखा नं॰ ३
शु
चं

मणिबंध रेखा

ऊपर से कांटे से निकल रहे हों तो बाहिरी स्थिति में दिनचर्या की कमजोरी रहेगी और मानसिक आनन्द रहेगा और यदि दोनों तरफ़ से साफ़ हो तो वह जीव मन से भी

प्रसन्न रहने वाला तथा बाहरी परस्थिति से भी सन्तोष पाने वाला होता है, और यदि जड़ की तरफ से साफ बनी हो और आगे की तरफ से कांटे से बन रहे हों तो वह जीव प्रथम अवस्था में अर्थात् युवा से पूर्व तक सुख उठाने वाला और बाद में सङ्कट सहन करने वाला होता है, और यह रेखा कहीं २ से टूट सी गई हो तो वह जीव जीवन में प्राणान्त सङ्कट सहन करते रहने वाला होता है, और यदि इस रेखा का मुँह गुरु की तरफ से हो तो आदर्श मार्ग का अनुयायी बड़प्पन पाने वाला होता है, और यदि शनि की तरफ इसका मुँह हो तो बहुत परिश्रम व परेशानियों से व युक्तियों से समय गुजारने वाला, तथा शनि और गुरु के बीच में मुँह हो तो दोनों भावों के मध्य का सा समय गुजारने वाला होता है, और यदि इस रेखा के मुँह पर त्रिशूल का सा आकार बन रहा हो तो वह जीव शत्रु से न दबने वाला, प्रभाव से रहने वाला, गरम मिजाज होता है।

* रेखा नं० २ *

जिस मनुष्य के रेखा नं० २ और तीन के मूल में बन्द कमल का चिह्न हो तो वह जीव संसार में रहते हुए भी मन के अन्दर विरक्त भावना रखने वाला, संयमी जीवन व्यतीत करने वाला, और भोगादिक पदार्थों के मुकाबले में धर्मानुकूल चरित्र पालन करने को सुन्दर समझने वाला

और धर्मानुकूल चलने वाला, लौकिक उन्नति को कम महत्व देने वाला, साँसारिक प्राणियों के स्वार्थमय चक्कर में न फँसकर अपने स्वतन्त्र शक्ति का परिचय देने वाला अर्थात दूसरे व्यक्तियों से स्वयं मोहित न होकर दूसरों को अपनी तरफ मोहित करने वाला, तथा कोमल स्वभाव वाला स्वतन्त्र सिद्धान्ती होता है।

जिस मनुष्य की रेखा नं० २ सीधी सामने मंगल के स्थान पर जाती है तो वह जीव चालू रिवाज के अनुसार लौकिक मार्ग में बुद्धि बल से तरक्की पाने वाला और कानूनी तरीके से अपने दिमाग को काम में लाने वाला. कोई अच्छा इन्तजाम करने वाला, स्वतन्त्र मिजाज वाला, अपने सिद्धान्त को ही बड़ा मानने वाला होता है।

जिस मनुष्य की रेखा नं० २ का मुँह कुछ नीचे की तरफ अर्थात् बुद्ध की तरफ हो तो वह जीव विवेक शक्ति से किसी खास तत्व की फिक्र में खोज करते रहने वाला और किसी विशेष कला की उन्नति को ही मुख्य मानने वाला तथा अपने सिद्धान्त की चतुराइयों से वृद्धि करने वाला होता है।

जिस मनुष्य की रेखा नं० २ ऊपर की तरफ जाती है अर्थात् चन्द्र स्थान की तरफ जिसका रुख होता है वह जीव अपने मनके अनुसार अपनी बुद्धि का प्रयोग करने

वाला और मानसिक विचारों की पुष्टि करने के लिये बुद्धि की शक्ति का विशेष प्रयोग करने वाला और उन्नति प्राप्त करने के लिये बहुत से प्रयत्न सोचने वाला तथा आमदनी को प्राप्त करने के लिये रोजाना अपनी बुद्धि का प्रयोग करने वाला होता है।

जिस मनुष्य की रेखा नं० २ के मुँह पर दो रेखा बन जाती हैं सर्प जिव्हा की तरह वह जीव बहुत भारी होशियारी से काम लेने वाला, विद्या और बुद्धि से महान् प्रभाव पाने वाला तथा आगे और पीछे की बहुत प्रकार की गम्भीर बातें सोचने वाला तथा कर्तव्य और अकर्तव्य का हर समय ध्यान रखने वाला और अपने व्यक्तित्व की रक्षा व मान रक्षा बड़ी सतर्कता और सावधानीसे करने वाला वाणी और दिमाग के अन्दर कोई विशेष शक्ति पाने वाला तथा मौजूदा जीवन और मृत्यु पर्यन्त तक की फिकर रखने वाला होता है।

जिस मनुष्य की रेखा नं० २ के मुँह पर सितारे का चिह्न हो तो वह जीव अपने विद्या बुद्धि के बल से बड़ी प्रशंसा और ख्याति प्राप्त करने वाला तथा विद्या स्थान से कोई नया प्रकाश देने वाला, कलाधारी और कोमलता प्रसन्नता रखने वाला तथा ईश्वर भक्ति के मार्ग का अनुयायी होता है।

नोट—दाहिने हाथ की रेखायें इस वर्तमान जीवन की लौकिक शक्तियों की सूचक है, और बांये हाथ की रेखायें कुछ पूर्व जन्म के संचित गुप्त रहस्यों की तथा सनातन सम्बन्धी विषयों की सूचक है।

* रेखा नं० ३

जिस मनुष्य की रेखा नं० ३ यदि शुरू से लेकर मणिबन्ध तक पूरी साबित होती है तो वह जीव स्त्री दामपत्य का पूरा सुख उठाने वाला होता है, और यदि बीच में से टूटी हुई हो तो वह जीव स्त्री स्थान में कंटक सहने वाला होता है और यदि जितने हिस्से में यह रेखा टूटी हुई है वहां पर इसी रेखा में से यदि दूसरी रेखा निकल कर चली हो जिसके कारण उसका टूटा हिस्से का दरवाजा बन्द हो गया हो या टूटी रेखा के सामने भाग्य की रेखा आ जाय तो उस मनुष्य का स्त्री सम्बन्धित जो दुःख है वह छिपा हुआ रहेगा और जाहिरा में ठीक रहेगा और इसके कारण दैनिक रोजगार में कुछ हानि या कमजोरी भी प्राप्त रहेगी इसके अतिरिक्त इस रेखा में यदि कुछ कांटे से निकले हों तो वह जीव स्त्री गृहस्थ के सम्बन्ध में कुछ दिक्कतें सहते रहने वाला झंझट युक्त होता है।

* हाथ में चतुष्कोण *

जिस मनुष्य के हाथ में चतुष्कोण का निशान होता है

वह जीव बड़ा चौकस रहकर कार्य में सफलता पाने वाला किन्तु गुरु के स्थान पर चतुष्कोण हो तो आदर्श मार्ग का व आध्यात्मिक विषय का अनुसरण बड़ी मुस्तैदी से करके हृदय बल के द्वारा उन्नति प्राप्त करने वाला और शनि के स्थान पर चतुष्कोण हो तो परिश्रम और हठधर्मी के मार्ग में चौकस रहकर उन्नति पाने वाला और सूर्य के स्थान पर चतुष्कोण हो तो वह जीव प्रभावशाली कर्म के स्थान में चौकस रहकर उन्नति करने वाला और बुद्ध के स्थान पर चतुष्कोण हो तो विवेक शक्ति के मार्ग में चौकस रहकर उन्नति करने वाला और मंगल के स्थान में चतुष्कोण हो तो अपनी बहादुरी और बाहुबल की शक्ति के मार्ग में चौकस रहकर उन्नति करने वाला और चन्द्र के स्थान में चतुष्कोण हो तो वह जीव मन की स्थिरता की धैर्यवान शक्ति से चौकस रहकर उन्नति करने वाला और शुक्र के स्थान पर चतुष्कोण हो तो वह जीव चतुराई और विशेष कला की शक्ति के स्थान मार्ग पर चौकस रहकर उन्नति करने वाला और रेखा नं० २ के मुँह पर चतुष्कोण हो तो वह जीव बुद्धि के स्थान में बड़ा भारी चौकस रहकर उन्नति करने वाला और रेखा नं० १ के मुँह पर चतुष्कोण हो तो वह जीव जीवन की दिनचर्या के मार्ग में चौकस रहकर आनन्द उठाने वाला और धन रेखा के पास गुरु की तरफ या

२-३ नम्बर की रेखा के मूल स्थान के पास चतुष्कोण हो तो धन को संग्रह करने में बड़ा चौकस रहकर कार्य करके उन्नति पाने वाला और शुक्र के स्थान पर चतुष्कोण हो तो वह जीव प्रेम और कला के स्थान पर चौकस रहकर उन्नति प्राप्त करने वाला होता है।

* हाथ में त्रिशूल *

जिस मनुष्य के हाथ में त्रिशूल रेखा हो तो वह जीव बहुत तीक्ष्ण कर्म करने वाला, शत्रु पक्ष को दमन करने वाला, बड़ा स्वाभिमान रखने वाला, विजयता होता है, किन्तु गुरु के स्थान पर त्रिशूल होय तो आदर्श शक्ति के द्वारा हृदय बल के प्रयोग से विजय प्राप्त करने वाला और शनि के स्थान पर त्रिशूल होय तो परिश्रम और कठोर नीति से विजय पाने वाला और सूर्य के स्थान पर त्रिशूल होय तो महान् प्रभाव शक्ति से विजय पाने वाला और बुद्ध के स्थान पर त्रिशूल होय तो विवेक शक्ति से विजय पाने वाला और मंगल के स्थान पर त्रिशूल होय तो दंडनीति से विजय पाने वाला और चन्द्र के स्थान पर त्रिशूल होय तो मनोयोग की शक्ति से विजय पाने वाला और शुक्र के स्थान पर त्रिशूल होय तो कला और भेदनीति से विजय पाने वाला और रेखा नं० २ के मुँह हर त्रिशूल होय तो, बुद्धि की भेदन व तीक्ष्ण शक्ति से विजय पाने वाला होता है।

* हाथ में ध्वजा रेखा *

जिस मनुष्य के हाथ में ध्वजा रेखा होय तो वह मनुष्य बड़ी ख्याति व प्रशंसा प्राप्त करने वाला, राजयोग प्राप्त करने वाल, न्याय और धर्म का पालन करने वाला, किन्तु यदि गुरु के स्थान पर ध्वजा योग होय तो वह जीव, बड़े बड़े आदमियों में मान प्राप्त करने वाला, हृदयबल व आध्यात्मिक बल प्राप्त करने वाला, यश और कीर्ति व ईश्वर भक्ति प्राप्त करने वाला, बड़े बड़प्पन वाला होता है और शनि स्थान पर ध्वजा रेखा होय तो परिश्रम की सफलता से यश और कीर्ति व नाम प्राप्त करने वाला होता है और सूर्य स्थान पर ज्वज रेखा हुई तो बड़े भारी महान् प्रभाव को प्राप्त करके यश कीर्ति व नाम प्राप्त करने वाला होता है, और यदि बुद्ध स्थान पर ध्वजा रेखा होय तो विवेक की सरल तरंगिनी योजनाओं से यश कीर्ति व नाम प्राप्त करने वाला होता है और मंगल के स्थान पर ध्वजा रेखा होय तो राज मान पाने वाला व ख्याति पाने वाला होता है और चन्द्र स्थान पर ध्वजा रेखा होय तो मनोयोग के प्रखर प्रभाव से यश कीर्ति और नाम पाने वाला होता है, और शुक्र के स्थान पर ध्वजा रेखा होय तो कला प्रेम और नीति के बल से यश कीर्ति और नाम प्राप्त करने वाला होता है, और भाग्य रेखा के सिरे पर

ध्वजा रेखा होय तो कुदरती योजनाओं के द्वारा यश कीर्ति व नाम प्राप्त करने के साधन पाने वाला होता है।

* नं० २ और ३ की रेखा के मूल से एक रेखा का गुरु के स्थान पर चढ़ना *

जिस मनुष्य के हाथ में नं० २ और नं० ३ के मूल में से एक रेखा गुरु के स्थान पर चढ़ती हुई हो तो वह जीव अपने पारवारिक जीवन में तथा बुद्धि के स्थान में एक सतोगुणी ढंग के द्वारा समय व्यतीत करने वाला और हमेशा धर्म शास्त्र तथा बुजुर्गों के बताये हुए सच्चे मार्ग का अनुशरण करने वाला तथा ज्ञान मार्ग के किसी प्रकरण में बड़प्पन प्राप्त करने वाला तथा गहरे तत्व की खोज करने वाला आदर्शवादी होता है।

* आंख की बीच की नीली पुतली *

जिस मनुष्य के आंखों की बीच की गोल पुतली यदि नीले आसमानी रंग की हो तो वह मनुष्य बहुत प्रकार के भोग सुख प्राप्त करने वाला तथा बहुत प्रकार के मुफ्त के से लाभ प्राप्त करने वाला और अपनी पेचीदा तरकीबों से बड़े २ फायदे उठाने वाला तथा अपने रुआब से भी फायदा उठाने वाला और सदैव अपने स्वार्थ सिद्धि करने में आरूढ़ रहनेवाला और अपने मीठे और सीधेपनके दिखावेसे अनुचित फायदा उठाने की ताकत रखने वाला दूसरों को बेवकूफ

बनाकर व चक्कर में डालकर भी फ़ायदा उठाने वाला तथा अपने देहादिक व लौकिक स्वार्थ के सामने परमार्थ और परलोक की परवाह न करने वाला बड़ा सतर्क होशियार होता है।

* आंखों के बीच की गोल कत्थई पुतली *

जिस मनुष्य की आँखों की बीच की गोल कत्थई पुतली हो तो वह जीव बड़ी भारी सज्जनता दरसाकर फ़ायदा उठाने वाला, एवं किसी प्रकार सिद्धई दिखाकर भी फ़ायदा उठाने वाला और बड़ी २ जचाव की बातों से दूसरों पर प्रभाव डालने वाला तथा बाहरी दिखावे में अपने मन और इन्द्रियों पर काबू रखने वाला और इसी हेतु दूसरों को प्रलोभन में डालकर त्याग वृत्ति के पुट से फ़ायदा उठाने वाला, बड़ा चतुर स्वार्थी होता है।

* हाथ में तिल *

जिस मनुष्य के हाथ में तिल का योग बना हुआ होय तो वह जीव परेशानियों के द्वारा यथा स्थान के योग से चालाकी व चतुराइयों को बर्तने वाला होता है जैसे गुरुके स्थान पर तिल का योग होय तो वह जीव प्रकट में आदर्श मार्ग का अनुयायी होता हुआ और अप्रकट में अनुचित रीति से व हृदय की परेशानियों से स्वार्थ सिद्धि करने वाला और पेचीदा तरकीबों से बड़प्पन व मान प्राप्त करने

वाला तथा हृदय की आन्तरिक शुद्धता में कमी पाने वाला होता है और शनि के स्थान पर तिल होने से, छिपाव शक्ति के बल से व कठिन परिश्रम व परेशानियों के बल से फायदा उठाने वाला होता है, और यदि सूर्य के स्थान पर तिल हो तो वह जीव प्रपंची विज्ञान और प्रपंची प्रभाव के द्वारा कार्य करने वाला तथा कठिनाइयों के द्वारा प्रभाव पाने वाला होता है और बुद्ध के स्थान पर तिल हो तो कठिनाइयों से युक्त जबरदस्त चतुराई और विवेक शक्ति की गहन युक्ति से फायदा उठाने वाला होता है, और मंगल के स्थान पर तिल होय तो वह जीव परेशानियों के योग से व अपनी चालाकी को कठिन कठोर रूप से इस्तैमाल करके फायदा उठाने वाला होता है और चन्द्र के स्थान पर तिल होय तो मनमें विकार तथा अशांति पाने वाला और मानसिक तकलीफें सह २ करके मन की छिपाव शक्ति से फायदा उठाने वाला होता है, और यदि शुक्र के स्थान में तिल होय तो कुछ कला और प्रेम के स्थान में कुछ दिक्कतें व न्यूनता का योग प्राप्त करके भी अपनी गहरी गहरी गम्भीर युक्तियों के बल से तथा कुछ अनधिकार रूप से भी लाभ प्राप्त करने वाला तथा कामवासना को विशेष स्थान देने वाला तथा बहुत स्वार्थ युक्त रहकर चतुराइयों का प्रयोग करने वाला होता है।

यदि रेखा नं० १ के बीच में तिल होय तो तन्दुरुस्ती की कुछ शिकायत पाने वाला व अपनी दिनचर्या के कार्य में कुछ टैक्ट से काम लेने वाला होशियार होता है।

यदि रेखा नं० २ के बीच में या सिरे पर तिल होय तो वह जीव हमेशा पौलसी और गूढ़ युक्तियों से काम करने व सोचने वाला तथा छिपाव के बगैर बातें न कर सकने वाला व दिमाग में कुछ परेशानी पाने वाला और कुछ पेचीदा तरकीबों से उन्नति का मार्ग सोचने वाला होता है।

यदि रेखा नं० ३ के बीच में तिल होय तो वह जीव अपने गृहस्थ के संचालन में बड़ी २ दिक्कतें सहने वाला तथा युक्ति बल से व बड़ी २ बेढब करकीबों से अपनी स्त्री व गृहस्थ का काम सँभालने वाला होशियार होता है।

यदि बीच हथेली में तिल होय तो धन की शक्ति प्राप्त करने के लिये बड़ी २ तरकीबों और गूढ़ युक्तियों से काम लेने वाला तथा धन संग्रह करने के हेतु बड़ी २ दिक्कतों को सहने वाला बहुत चतुर होशियार बड़ा स्वार्थ युक्त होता है।

* अँगुष्ठ में जौ का चिह्न *

जिस मनुष्यके दाहिने हाथके अंगुष्ठमें जौ का चिह्न होतो वह जीव अन्न वस्त्र की प्राप्ति को सदैव प्राप्त करने वाला

और आवश्यक पदार्थों को प्राप्त करने वाला तथा गुजर करने के मजबूत साधन करने वाला तथा उदारता और न्याय को चाहने वाला होता है।

* हाथ में सितारे का निशान *

जिस मनुष्य के हाथ में सितारे का निशान जिस ग्रह के स्थान पर होगा उस ग्रह की स्वभावानुसार रीति से तथा उस कर्म से उस आदमी को चमकाने वाला तथा यश दिलाने वाला होता है।

* हाथ के मूल में मत्स्य का निशान *

जिस मनुष्य के हाथ में मणिबंध के पास मच्छ का निशान होय तो वह जीव गृहस्थ के अन्दर बहुत प्रकार से आनन्द प्राप्त करने वाला तथा व्यापार आदि कर्म में सफलतायें प्राप्त करने वाला तथा मनमें मग्न रहने वाला और सुन्दर २ भोजन प्राप्त करने वाला तन्दुरुस्त होता है।

* हाथ के मूल में मच्छ रेखा नं० ३ से मिली हुई *

जिस मनुष्य की मच्छ रेखा हाथ के मूल में रेखा नं० ३ में बिल्कुल मिली हुई होय तो वह जीव गृहस्थ सम्बन्धित हर एक प्रकार की सफलताओं को हमेशा दिक्कतों से प्राप्त करते रहने वाला और चिन्ताओं से टकरा २ कर सुख की प्राप्ति करने वाला, मानयुक्त सज्जनतायुक्त होता है।

* हाथ में धनुष का निशान *

जिस मनुष्य के हाथ में धनुष का निशान होय तो वह जीव वीर प्रकृति वाला, बड़ा पराक्रम रखने वाला तथा अपने बाहुबल से बहुत २ प्रकार की सफलतायें पाने वाला, शत्रु को नीचा दिखाने वाला, बड़ा प्रभाव पाने वाला, धैर्यवान विजयता होता है।

* मणिबंध रेखा में से धन रेखा का निकास *

जिस मनुष्य की मणिबंध रेखा में से रेखा निकल कर धन रेखा से मिली हो या चन्द्र स्थान पर से गुजरी हो तो वह जीव गहरे तत्व की खोज करने वाला व गहरे तत्व को प्राप्त करने वाला, और कुदरती सहायताओं से तरक्की पाने वाला, गम्भीर मार्ग का अनुयायी होता है।

* मणिबंध रेखा *

जिस मनुष्य की मणिबंध रेखा नं० १ यदि पूरी साबित हो तो बाल्यावस्था सुख पूर्वक व्यतीत होती है और यदि टूटी हुई हो तो बाल्यावस्था दुःख पूर्वक कटती है और मणिबंध रेखा नं० २ टूटी हुई हो तो वह जीव युवावस्था में दुःख सहन करने वाला होता है, और मणिबंध रेखा नं० २ पूरी साबित हो तो युवावस्था में सुख प्राप्त करने वाला होता है और मणिबंध रेखा नं० ३ साबित हो तो बुढ़ापे में सुख प्राप्त करने वाला होता है और रेखा नं० ३

टूटी हुई हो तो बुढ़ापे में दुःख प्राप्त करने वाला होता है और यदि कोई भी मणिबंध रेखा पहुँचे के चारों तरफ पूरी घूम जाय तो वह किसी विशेष शक्ति को प्राप्त कराने वाली सिद्धि स्वरूप होती है।

* दाहिने हाथ की अनामिका अँगुली की तीसरी रेखा से कनिष्ठका बड़ी या छोटी *

जिस मनुष्य के दाहिने हाथ की अनामिका अँगुली की तीसरी रेखा से यदि कनिष्ठका अँगुली बड़ी हो तो वह जीव बड़े आदर्श मार्ग का अनुयायी तथा प्रशंसा और यश कीर्ति प्राप्त करने वाला तथा ख्याति प्राप्त करने वाला और गहन विवेक रखने वाला, धर्म का पालन करने वाला, ईश्वरवादी होता है।

जिसकी अँगुली अनामिका की तीसरी रेखासे कनिष्ठका छोटी होती है वह जीव लौकिक कार्यों की सफलता में ही लगा रहने वाला तथा पारमार्थिक व धार्मिक तत्व की परवाह न करने वाला तथा सुयश की कमी पाने वाला और अपना मतलब सिद्ध करने के हेतु सत्य असत्य की की परवाह न करने वाला, स्थूल तत्व का ग्राही होता है।

* हाथ की अँगुलियों में चक्र का निशान *

जिस मनुष्य के हाथ की अँगुष्ठ और तर्जनी अँगुली दोनों में ही चक्र हो तो वह जीव अच्छी मुनाफा खाने

वाला, बरावर धन पैदा करने में लगा रहने वाला अच्छी आमदनी वाला, स्वार्थ में तत्पर रहने वाला तथा धन को ही मुख्य मानने वाला तथा विशेष शक्ति का प्रयोग करने वाला, व गौरव रखने वाला होता है।

यदि मध्यमा अँगुली में चक्र हो तो औसत दर्जे की स्थिति में रहकर भी चारों तरफ का ख्याल रखने वाला, बड़ा सावधान होशियार और बड़प्पन रखने वाला, स्वाभिमानी तथा अपने मतलब को खूब बनाने वाला चतुर होता है।

यदि अनामिका अँगुली में चक्र हो तो वह जीव सामान्य रीति से अपना काम बनाने वाला, औसत दर्जे की रहन सहन को ही ठीक समझने वाला तथा कुछ संतोष वृत्ति रखने वाला, लाभयुक्त कुछ तेजी रखने वाला होता है।

यदि कनिष्टका अँगुली में चक्र हो तो वह जीव बड़ी नरमाई के साथ रहकर ईश्वरीय बल की गुप्त आभा प्राप्त करने वाला तथा चमत्कारिक व आश्चर्यजनक कार्य करने वाला तथा न्याय, शील, संतोष आदि को मानने वाला व कोमल शक्ति के प्रयोग से उन्नति प्राप्त करने वाला व ईश्वर विश्वासी भक्ति मार्ग वाला होता है।

※ हाथ की अँगुलियों में शंख का निशान ※

जिस मनुष्य के अँगुष्ठ में शंख का निशान होय तो वह जीव दूसरे व्यक्तियों को अदां दिखाने के सम्बन्ध में व अपनी चतुराई विशेष दिखाने के सम्बन्ध में व भोगादिक वस्तुओं की सफलता पाने के सन्बन्ध में कुछ नाम पाने वाला होता है।

जिस मनुष्य की तर्जनी अँगुली में शंख का निशान होय तो वह जीव आदर्श मार्ग का अनुसरण करने के सम्बन्ध में व विद्या ज्ञान आदि गुणों का प्रदर्शन करने के सम्बन्ध में तथा बड़प्पन, गौरव आदि हृदय बल की शक्ति से मान प्राप्त करने के सम्बन्ध में एवं अकाट्य वाणी कहने के सम्बन्ध में नाम पाने वाला होता है।

जिस मनुष्य की मध्यमा अँगुली में शंख का निशान होय तो वह जीव उन्नति के हेतु विशेष परिश्रम करने के के प्रकरण से, तथा पुरुषार्थ को प्रधानता देने के प्रकरण से और अपने स्वार्थ की सिद्धि करने के निरन्तर प्रयत्न करने प्रकरण से नाम पाने वाला, अर्थात् बाहुबल की शक्ति का ढिंढोरा पीटने वाला होता है।

जिस मनुष्य की अनामिका अँगुली में शंख का निशान हो तो वह जीव अपने तपोबल की व संयम की मार्ग परिपाटी का अनुसरण करने के प्रकरण से, तथा

ज्ञान विज्ञान का किसी प्रकार प्रकाश करने के प्रकरण से नाम पाने वाला तथा दूसरों पर अपना प्रभाव डालने के प्रकरण से नाम पाने वाला होता है।

जिस मनुष्य की कनिष्टका अँगुली में शंख का निशान होय तो वह जीव विवेक और बुद्धि के प्रकरण सम्बन्ध से तथा व्यवहार सम्बन्धित कार्यों में नरमाई से काम लेने के प्रकरण सम्बन्ध से नाम पाने वाला व सुन्दर सुझाव देने वाला होता है।

* हाथ की बहुत मुलायम चमड़ी *

जिस मनुष्य के हाथ की चमड़ी बहुत मुलायम हो तो वह मनुष्य बहुत थोड़ा परिश्रम करने वाला और सुख प्राप्ति के मजबूत साधन पाने वाला, और मकान जायदाद इत्यादि भूमि का सुख प्राप्त करने वाला, आरामतलब आमदनी पाने वाला एवँ माता के गुणों से युक्त होता है।

* हाथ की बहुत कड़ी चमड़ी *

जिस मनुष्य की हाथ की बहुत कड़ी चमड़ी हो तो वह मनुष्य बहुत ज्यादे परिश्रम करने वाला तथा सुख प्राप्ति के साधनों में कमी पाने वाला तथा मकान जायदाद सवारी आदि की कमी पाने वाला तथा पिता के गुणों से युक्त मेहनती होता है।

* हाथ की चमड़ी थोड़ी मुलायम *

जिस मनुष्य के हाथ की चमड़ी थोड़ी मुलायम हो तो वह जीव थोड़ी मेहनत करने वाला तथा थोड़ा सुख प्राप्त करने वाला व मकान आदि का थोड़ा सुख प्राप्त करने वाला और माता पिता का थोड़ा २ स्वभाव प्राप्त करने वाला होता है ।

* कमर पतली *

जिस मनुष्य की कमर पतली हो तो वह जीव चंचलता और चपलता रखने वाला, तेज गति से चलने वाला और प्रत्येक कार्यों में शीघ्रता चाहने वाला तथा नाजुक मिज़ाजी रखने वाला, व सरलता पूर्वक कार्य करने वाला और मनोरंजक विषयों को विशेष महत्व देने वाला, सुन्दरता-युक्त वस्तुओं को चाहने वाला और थोड़ी नफा से भी खुश हो सकने वाला शान्ति प्रिय होता है ।

* कमर मोटी *

जिस मनुष्य की कमर मोटी होती है वह जीव हठीला स्वभाव रखने वाला, और अपने मन्तव्य पर अड़कर कार्य करने वाला तथा अधिक नफा चाहने वाला, सामन्य गति से चलने वाला और अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिये बहुत से मार्ग तैयार करते रहने वाला तथा अगाड़ी पिछाड़ी के लिये बड़े इन्तजाम सोचने वाला तथा जीवन व्यतीत करने

के सम्बन्ध में निर्वाहकशक्ति की मजबूती पाने वाला भाग्यवान कुछ लापरवाह होता है।

* भोगेन्द्रिय पर दाहिनी ओर या सन्मुख तिल *

जिस मनुष्य की इन्द्री पर दाहिनी तरफ या सामने तिल होते हैं वह जीव अधिक भोग विलास प्राप्त करने वाला तथा अधिक २ प्रकार से मैथुन सुख प्राप्त करने वाला तथा मैथुन सम्बन्धी मामलों में धर्माधर्म के बन्धन की परवाह न करने वाला तथा गुप्त युक्तियों वाला होता है।

* भोगेन्द्रिय का बांई तरफ झुकाव *

जिस मनुष्य की इन्द्री का झुकाव बांई तरफ को होता है वह जीव मैथुन आदि भोगों की कमी पाने वाला एवं इन्द्रिय भोगादिक पक्ष में न्याय अन्याय का ख्याल तथा विरक्तता के से भाव विचार रखने वाला, अर्थात् लौकिक व देहिक सुख सम्बन्धों के मुकाबले में पारलौकिक और तत्वयुक्त सुखों को विशेष महत्व देने वाला, गहरे विचार वाला, दूरदर्शी होता है।

* भोगेन्द्रिय का दाहिनी ओर झुकाव *

जिस मनुष्य की इन्द्री का दाहिनी ओर झुकाव हो तो वह जीव अत्याधिक मैथुन प्राप्त करने वाला, उचित अनुचित की परवाह न करने वाला तथा सांसारिक सुख पदार्थों की तुलना में धर्म अधर्म की परवाह न करने

वाला और अपनी स्वार्थ सिद्धियों के सन्मुख लोक लज्जा की भी लापरवाही रखने वाला, भोगी होता है।

❀ भोगेन्द्रिय का अधिक स्थूल और लंबापन ❀

जिस मनुष्य की इन्द्री अधिक मोटी लंबी हो तो वह जीव धन की हानि और कमी का योग पाने वाला तथा मान प्रतिष्ठा की कुछ कमी पाने वाला तथा विषय भोगादि में महान् तत्व देखने वाला, और तन, मन, धन, भोगादिक में रत रहने वाला तथा अधिक स्वार्थ रखने वाला, व धर्म अधर्म का विचार पालन न कर सकने वाला, स्थूल बुद्धि वाला, कार्य प्रवीण मेहनती होता है।

❀ भोगेन्द्रिय का हल्का आकार ❀

जिस मनुष्य की इन्द्री का हल्का आकार हो तो वह जीव धन सम्बन्धी चिन्ताओं से प्रायः मुक्ति पाने वाला, और विचारों में सन्तोष रखने वाला, थोड़ी मेहनत से काम करने वाला, मान प्रतिष्ठा आदि पाने वाला और किसी प्रकार भाग्यवान समझा जाने वाला, तथा धर्म अधर्म, भलाई बुराई को अच्छी तरह समझकर चलने वाला सज्जन होता है।

❀ स्थूल जंघा ❀

जिस मनुष्य के जंघा स्थूल होते हैं वह जीव बड़ी भारी हिम्मत से काम लेने वाला और शत्रु स्थान में डट-

कर सामना करने वाला तथा जीवन की निर्वाहक शक्ति को अपनी शक्ति से प्राप्त रखने वाला और छोटी मोटी मुसीबतों की परवाह न करने वाला, तथा अपनी बात बड़ी चाहने वाला, गुस्सा और हठयोग से काम लेने वाला, भोग चाहने वाला तथा थोड़ा चलने वाला, आराम पसंद होता है।

* पतले जंघा *

जिस मनुष्य के जंघा पतले होते हैं वह जीव थोड़ी हिम्मत वाला, व थोड़ी शक्तिबल वाला और शत्रु स्थान में युक्ति से काम लेने वाला और चतुराइयों से बड़े २ काम निकालने वाला तथा थोड़ी २ मुशीबतों में घबड़ाहट महसूस करने वाला तथा जीवन निर्वाह करने के साधनों में कुछ कमजोरी पाने वाला, स्वभाव में नरमाई रखने वाला, बड़ा सावधान होशियार होता है।

* पतली टांगें *

जिस मनुष्य की टांगें पतली नीचे तक इकसारहोती हैं वह जीव अल्प आमदनी प्राप्त करने वाला तथा थोड़ी हैसियत वाला, स्वच्छन्द विचरण करने वाला, गरीबी के तौर से मतलब निकालने वाला तथा शत्रु स्थान में मुकाबला न कर सकने वाला तथा घूमने फिरने की आदत पाने वाला सावधान होता है।

❋ टांगों की मोटी पीढ़री ❋

जिस मनुष्य के टांगों की पीढ़री मोटी होती है वह जीव बड़ी तरकीबों से काम निकालने वाला और अनेक प्रकार के उतार चढ़ाव की चालों से अनेक प्रकार के मतलब सिद्ध करने वाला, तथा कठिन से कठिन मुसीबतों में भी हिम्मत से काम लेने वाला और शत्रु स्थान में प्रभाव रखने वाला और समय के अनुसार चाल चलने वाला, बड़ा चतुर होता है।

❋ लँगड़ी टांगें ❋

जिस मनुष्य की टांगों में लँगड़ापन होता है वह जीव अपनी आदतों से कुछ दूसरों को चुभन पैदा करने वाला और कुछ अनुचित रूप से अपनी कार्य पद्धति पर चलने वाला और हेकड़ी से व हठधर्मी से काम करने वाला तथा अधिक स्वार्थ में रत रहने वाला और अपने मन्तव्य के सन्मुख निन्दा स्तुति व मान अपमान की कम परवाह करने वाला और अपनी निराली तरकीबों से काम निकालने वाला होता है।

❋ चलते वक्त पांव के पञ्जों का आगे की तरफ से एक दूसरे की तरफ झुकाव होना ❋

जिस स्त्री पुरुषों के चलते वक्त आगे की तरफ से दाहिने पांव का पञ्जा बांई तरफ को और बांये पांव का

पञ्जा दाहिनी तरफ़ को पड़ता हो तो वह जीव विषयभोगों के सम्बन्ध में महान् दिलचस्पी के साथ योग देने वाला और इन्द्रिय लोलुपता में व लौकिक भोगादिक पदार्थों की सफलता में ही मनुष्य जीवन की सर्वस्य सिद्धि मानने वाला और पारमार्थिक व धार्मिक कार्यों में दिखावटी सज्जनता से कार्य करने वाला, बड़ा महान् स्वार्थी व सुन्दरता का मानने वाला और छिपाव युक्त बातों से बहुत मतलब सिद्ध करने वाला होता है।

* पांव के तलुओं में गड्ढा न होना *

जिस मनुष्य के पांव के तलुओं में गड्ढा नहीं होता है वह जीव अपने अन्दर बड़ी मस्ती व लापरवाही रखने वाला, स्वार्थ युक्त रहने वाला तथा देह का आकार कुछ वजनदार पाने वाला और खाने पीने के पदार्थों में विशेष दिलचस्पी और अधिकता पाने वाला और अपने स्वभाव के अनुसार ही चलने वाला तथा दुनियां की भलाई बुराई के डर से डर न मानने वाला, यश व बरक्कत की कुछ कमी पाने वाला और आहिस्ते २ चलने वाला, कुछ अड़ियल स्वभाव होता है।

* पांव के तलुए में गड्ढा *

जिस मनुष्य के पांव के तलुए में गड्ढा होता है वह जीव बहुत विचार २ कर कार्य करने वाला, तथा दुनियां-

दारी की भलाई बुराई का ध्यान रखने वाला, फुर्ती से काम करने की इच्छा रखने वाला तथा नाज अन्दाज का स्वभाव पाने वाला और उन्नति पर पहुँचने की बड़ी इच्छा रखने वाला एवं उन्नति के लिये बड़ी दौड़धूप करने वाला होता है।

* चलते वक्त पांव के पञ्जों का आगे की तरफ से दोनों का विपरीत होकर चलना *

जिस मनुष्य के चलते वक्त पांव के दोनों पंजे आगे की तरफ से विपरीत होकर चलते हों और ऐड़ियों की तरफ से मिलानसा होता प्रतीत हो तो वह जीव विषय-भोगादिक, योगों की कमी पाने वाला तथा अपने स्वाभिमान व व्यक्तित्व की रक्षा का सदैव ध्यान रखने वाला और सामाजिक व धार्मिक बन्धनों के किसी भी कारणों से व्यभिचार व पाप के मार्ग से बचकर चलने वाला और सांसारिक पदार्थों के सुख साधनों में बहुत गम्भीर विचारों से काम लेने वाला, विवेकी होता हैं।

* कन्धे उचकाने की आदत *

जिस मनुष्य को चलते वक्त या बातें करते वक्त अमूमन कन्धा उचकाने की आदत हो तो वह जीव मन के अन्दर अधिक प्रसन्नता अनुभव करनेके कारण पानेवाला तथा कुछ अधिक और मुफ्त की सी नफा खाने वाला और अपने मित्र

से ज्यादे काम कर सकने की अपने अन्दर सफलता युक्त खुशी प्राप्त करने वाला तथा बुजुर्गी और बड़प्पन के स्वभाव से वंचित रहने वाला और किसी २ मार्ग में गुप्त रूप से अनुचित लाभ पाने वाला होता है।

* पांव के तलुए में उर्ध रेखा *

जिस मनुष्य के पांव में एक रेखा ऐढ़ी की तरफ से निकल कर अँगूठेका और अँगुलीके दरम्यान तक पहुँचती है वह जीव धन की शक्ति प्राप्त करने वाला तथा सुख ऐश्वर्य भोगने वाला अन्न वस्त्र आदिक पदार्थों की बेफिक्री पाने वाला तथा नौकर चाकर आदि की शक्ति प्राप्त करने वाला और बहुत स्वार्थ सिद्ध करने वाला, बहुत होशियारियें से काम निकालने वाला, मानयुक्त, मकान जायदाद वाला आरामी जीव होता है।

* पाँव की अँगुलियों में चौथी छोटी अँगुली पांचवीं के बराबर छोटी *

जिस मनुष्य के पांव की चौथी अँगुली, पांचवीं छोटी अँगुली के बराबर ही छोटी हो तो वह जीव अपनी स्त्री की सुन्दरता में कमी पाने वाला और यदि स्त्री के पांव में इस प्रकार आखीर की दोनों अँगुली छोटी हो तो वह स्त्री अपने पति की सुन्दरता में कमी पाने वाली होती है अर्थात् दामपत्य जीवन की सुन्दरता में कमी पाने का योग

प्राप्त होता है और अनेक प्रकार की विशेष चतुराइयों से अपने स्वार्थ की सिद्धि करने वाला होता है।

* अधिक तनकर या ऊपर को मुँह करके चलना *

जिस मनुष्य का चलते समय देह बहुत सीधा तना हुआ हो या मुँह ऊपर को रहता हो तो वह जीव आमदनी से सुख उठाने वाला, तथा किसी प्रकार गुमान व स्वाभिमान रखने वाला तथा शील सन्तोष और परमार्थ की वास्तविक रूप में अवहेलना करने वाला और स्वार्थ हेतु सदैव सज्जनता का नरम व्यवहार करने वाला तथा विद्या और ज्ञान की गहराई में कमी पाने वाला तथा मकानादि भूमि का सुख उठाने वाला और किसी प्रकार के गौरव और स्वतंत्रता से युक्त मगन मन होता है।

* दाहिने पांव के तालुए में ऐड़ी के दाहिनी तरफ से एक रेखा का निकल कर ऊपर को अँगुली और अँगूठे की तरफ जाना *

जिस मनुष्य के दाहिने पांव के तालुए में, एक रेखा ऐड़ी की दाहिनी तरफ से निकल कर अँगुष्ठ और अँगुली के दरम्यान की तरफ ऊपर को जाती है तो वह जीव असाधारण कार्य की पूर्ति करके उन्नति और ख्याति प्राप्त करने वाला तथा दैवी गुणों को प्राप्त करने वाला प्रशंसा युक्त होता है।

* हकलाकर बोलना *

जिस मनुष्य को हकला कर बोलने की आदत होती है वह जीव अधिकतर झूँठ के सहारे से बातें बनाकर काम निकालने वाला तथा दूसरे व्यक्तियों को चक्कर में डालकर फायदा उठाने वाला और अपनी अक्ल को अपने मनमें बहुत बड़ी समझने वाला, किन्तु वास्तव में, वास्तविक तत्व ग्राहणी बुद्धि की कमी पाने वाला, चलते पुर्जा होता है।

* औरत के मुँह पर मूंछों का चिह्न *

जिस औरत के मुँह पर मूंछों की रेख जैसे बाल, मूंछों के स्थान पर होते हैं वह स्त्री बहुत गरम मिजाज रखने वाली तथा अपने सारे परिवार में अपनी हेकड़ी चलाने वाली और पति स्थान पर अपना प्रभुत्व जमाकर रखने वाली तथा पति की यथार्थ सेवा न कर सकने वाली तथा अपने मनमें अपने को बहुत बड़ा मानने वाली और वास्तव में, शील, सन्तोष, शान्ति, न्याय, विवेक आदि सद्गुणों की कुछ कमी पाने वाली कुछ अशांत युक्त तथा बरक्कत की कुछ कमी पाने वाली होती है।

* हर प्रकार के अंग फड़कना *

जिस मनुष्य की दाहिनी भुजा फड़कती है तो वह जीव किसी प्रकार की सफलता और विजय प्राप्त करके उत्साह युक्त होता है।

जिस मनुष्य की बांई भुजा फड़कती है वह जीव किसी प्रकार की हानि परेशानी या परतन्त्रता आदि बन्धन का सा योग प्राप्त करता है।

जिस मनुष्य की दाहिनी तरफ से पीठ फड़कती है वह जीव किसी प्रकार से कुछ निर्भयता प्राप्त करता है।

जिस मनुष्य की बांई पीठ फड़कती है वह जीव किसी प्रकार से भय प्राप्त करता है।

जिस मनुष्य का दाहिना नेत्र ऊपर से फड़कता है वह जीव सुख शांतियुक्त कोई सुन्दर समाचार पाता है।

जिस मनुष्य का बांया नेत्र ऊपर से फड़कता है वह जीव कुछ अशांति युक्त दुःखद समाचार पाता है।

जिस मनुष्य के नेत्र नीचे की तरफ से फड़कते हैं वह प्रायः निर्मूल भ्रमात्मक विचारों को पैदा कराते हैं।

जिस मनुष्य की दाहिनी भौं फड़कती है वह जीव बहुत ऊँची योजनाओं के द्वारा सफलता और सुख के साधन पैदा करता है।

जिस मनुष्य का दाहिना माथा फड़कता है वह जीव किसी प्रकार की अनायास सफलता को प्राप्त करता है।

जिस मनुष्य का बांया माथा फड़कता है वह जीव अनायास कुछ असफलता को प्राप्त करता है।

जिस मनुष्य की दाहिनी तरफ से नासिका फड़कती

है तो वह जीव किसी प्रकार कुछ वड़प्पन को प्राप्त करता है।

जिस मनुष्य की बांई तरफ से नासिका फड़कती है उस मनुष्य को किसी प्रकार कुछ बात में कमजोरी आती है।

जिस मनुष्य का दाहिना कपोल फड़कता है तो वह जीव सुख और आनन्द को प्राप्त करता है।

जिस मनुष्य का बांया कपोल फड़कता है तो वह जीव सुख आनन्द में कुछ कमी अनुभव करता है।

जिस मनुष्य की मूंछों के पास से दाहिना होठ फड़कता है उसके प्रभाव की वृद्धि होती है।

जिस मनुष्य की मूछों के पास से बांया होठ फड़कता है उसके प्रभाव में कुछ कमजोरी आती है।

जिस मनुष्य की ठोड़ी फड़कती है तो वह जीव गौरवता को प्राप्त करके दूसरों के स्नेह का पात्र बनता है।

जिस मनुष्य का दाहिना पेट फड़कता है तो वह जीव सुन्दर २ स्वादिष्ट भोजन प्राप्त करता है।

जिस पुरुष का बांया पेट फड़कता है तो वह जीव सुन्दर स्वादिष्ट भोजन की कमी पाता है।

जिस पुरुष की दाहिनी जांघ फड़कती है तो वह जीव हिम्मत शक्ति का विकास पाता है।

जिस पुरुष की बांई जंघा फड़कती है तो वह जीव हिम्मत शक्ति की कमजोरी पाता है।

जिस मनुष्य का दाहिने घोंटू से नीचे का पैर फड़कता है वह जीव कुछ दौड़धूप से सफलता पाता है।

जिस मनुष्य का बांये घोंटू से नीचे का पैर फड़कता है उस जीव की दौड़धूप बेकार साबित होती है।

* बुद्धि व हृदय *

जिस मनुष्य के बुद्धि व हृदय में कोमलता और सत्यता का अभाव होता है, वह जीव सन्तान पक्ष से किसी भी रूप में कष्ट अवश्य अनुभव करता है और अशांत प्रद रहता है। जिस मनुष्य के हृदय में कोमलता और सत्यता रहती है वह जीव सन्तान पक्ष में किसी प्रकार अच्छे सुख का अनुभव करता है।

* दैनिक रोजगार *

जिस मनुष्य के रोजगार की लाइन में आन्तरिक कपट का व्यवहार होता है वह जीव स्त्री स्थान में हानि या कष्ट प्राप्त करता है और यदि जिस मनुष्य के रोजगार की लाइन में सत्यता, वास्तविक रूप में होती है वह स्त्री स्थान में अच्छा सुख प्राप्त करता है।

* उन्नति पथ और मान *

जिस मनुष्य का पिता से निष्कपट शीलयुक्त व्यवहार नहीं है वह जीव अपनी उन्नति और मान प्रतिष्ठा के

सम्बन्ध में बड़ी २ दिक्कतें और परेशानी प्राप्त करता है और यदि पिता से सच्चा व्यवहार है तो उन्नतिके मार्ग में कठिनाइयां प्राप्त नहीं करेगा।

* सुख स्थान *

जिस पुरुष का अपनी माता से आन्तरिक शुद्ध प्रेम नहीं है वह जीव सुख प्राप्ति के सम्बन्ध में बड़े २ कष्ट व कमी प्राप्त करता है, और यदि माता से सच्चा प्रेम है तो वह जीव अपने जीवन में बहुत सुख और मकानादि का सुख भी प्राप्त करता है।

* शत्रु स्थान *

जिस पुरुष का ननसाल पक्ष जोरदार होता है, वह जीव शत्रुपक्ष में बड़ा सुन्दर व आदर्श प्रभाव रखता है, और यदि शत्रुपक्ष में जो आदमी गुप्त और कटू युक्तियों से काम लेता है उसको ननसाल पक्ष के सुख में कमी प्राप्त होती है।

* पुरुषार्थ स्थान *

जो पुरुष अपने बाहुबल की शक्ति का बहुत कठिन व कटु रीति से स्तैमाल करके गुप्त युक्तियों से उन्नति की तरफ़ दौड़ता है वह जीव अपने भाई बहिन के सुखस्थान में दिक्कतें व सुख की कमी प्राप्त करता है, और यदि

अपने बाहुबल की शक्ति का सदुपयोग करता है तो भाई बहिन के स्थान में सुख की प्राप्ति करता है।

❀ भाग्य स्थान ❀

जो पुरुष धर्म के सच्चे अंग का पालन नहीं करता है वह वह जीव अपने भाग्य की असफलताओं व यश प्राप्तिपर दुःख का अनुभव किया करता है, और यदि वास्तविक में सच्चे धर्म का पालन करता है तो शान्ति और बरक्कत प्राप्त करके भाग्यवान बनता है।

❀ खर्च स्थान ❀

जिस पुरुष के बाहरी दूसरे स्थानों से सम्बन्ध बहुत कम होता है वह आदमी थोड़े खर्चे से काम चलाता है और जिसका दूसरे स्थानों से ज्यादे सम्बन्ध होता है वह आदमी बहुत खर्च करने वाला होता है।

❀ संचित धन ❀

जिस पुरुष का सदैव कौटुम्बिक क्लेश रहता है या कौटुम्ब, परिवार नहींके बराबरहै वह आदमी संचित धनकी कमी पाता है या ठीक तौर से धन को भोग नहीं पाता है और यदि कौटुम्बिक सुख सुन्दर और शान्ति युक्त है तो धन का सुख प्राप्त करता है।

❀ पूर्व संचित धरोहर ❀

जिस पुरुष की नाभी के नीचे पेट में या गुदा में

कोई खास वीमारी रहती हो उस आदमी को या तो पुरातत्व धन शक्ति मिलती नहीं है, या कभी-कभी पूर्व संचित धन की वड़ी-वड़ी हानियां होती रहती हैं, और यदि किसी को उदर विकार कतई नहीं होता तो वह आदमी पूर्व संचित शक्ति या जीवन निर्वाहक शक्ति को ठीक प्राप्त कर सकता है।

* समाप्तम् *

* * *

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता—
लाला श्यामलाल हीरालाल,
श्यामकाशी प्रेस, मथुरा।